खण्ड: 3, अंक: 06 जून 2020

संश्लेषण

डी सी आर सी हिन्दी मासिक पत्रिका

भारत-चीन संबंध
समसामयिक परिदृश्य एवं परिवर्तनीयता

डी.सी.आर.सी.
विकासशील राज्य शोध केन्द्र
दिल्ली विश्वविद्यालय

मुख्य संपादक
प्रो. सुनील के चौधरी

संपादक
डा. रमेश भारद्वाज
नागेन्द्र कुमार
शरद कुमार यादव

संपादकीय मंडल
डा. अभिषेक नाथ
कुँवर प्रांजल सिंह
आशीष कुमार शुक्ल

© डीसीआरसी 2020

रूपाकंनः आर किशोर

संश्लेषण

भारत–चीन संबंधः समसामयिक परिदृश्य एवं परिवर्तनीयता

अनुक्रमिका

संपादकीय		i-ii
1. भारत–चीन सम्बन्धः चुनौतिया एवं मुद्दे	– चित्रा राजौरा	1–4
2. भारत और चीन के बदलते संबंध	– अनिल कांबोज – डॉ रितु तलवार	5–8
3. भारत–चीन संबंधों का परिवर्तित परिदृश्यः एक राजनीतिक वास्तविकता	– सृष्टि	9–12
4. भारत–चीन संबंधः क्या पड़ोसी बदला जा सकता है?	– प्रियंका बारगल – हितेन्द्र बारगल	13–16
5. विस्तारवादः सिनो सत्ता का अंतिम चरण	– प्रिति यादव	17–19
6. सीनो, सहयोग और संघर्ष– वैश्विक व्यपार के संदर्भ में	– रजनी	20–23
7. चीन की विस्तारवादी चाल का भारतीय जवाब	– संजय	24–26
8. भारत–चीन संबंध एवं चीनी ऐप्स का बहिष्करण	– जया ओझा	27–29
9. चीन के विस्तारवाद के समक्ष भारत की भूमिका	– दीपक	30–31
10. सीमा विवाद के उपरान्त चीनी उत्पादों को बॉयकाट एवं भारत–चीन के मध्य आर्थिक संबंध	– डॉ. अमित अग्रवाल	32–34
11. परशुराम की प्रतोक्षा का अंत	– गरिमा शर्मा	35–37

सम्पादकीय

निरंतरता, समसामयिकता एवं गुणवत्ता के आधारभूत बिंदुओं से संचालित केन्द्र की हिन्दी शोध पत्रिका संश्लेषण के इस षष्टम अंक को पाठकों के समक्ष प्रेषित करते हुए हमें एक बार पुनः अत्यंत हर्ष का अनुभव हो रहा है। अगस्त 2018 से अब तक केन्द्र 22 पत्रिकाओं का अनवरत प्रकाशन कर चुका है। प्रत्येक माह के समसामयिक विषय पर विभिन्न शोधार्थियों एवं समाज शास्त्रियों के लेखों के माध्यम से समाज विज्ञान के विविध वाद–विषयों पर एक नवीन विमर्श प्रचलित करना गत तीन वर्षो से केन्द्र की एक अभूतपूर्व सफलता रही ह। सफलताओं एवं उपलब्धियों के इसी क्रम में संश्लेषण का एक और ज्वलंत अंक प्रस्तुत किया जा रहा है।

वर्ष 2020 में जहाँ सम्पूर्ण विश्व के समक्ष कोविड़–19 एवं कोरोना ने आंतरिक संकट उत्पन्न किया वहीं अंर्तराष्ट्रीय क्षेत्र में चीनी सीमा अतिक्रमण ने भारत के लिए एक और चुनौतीपूर्ण संघर्ष भी प्रस्तुत किया। लद्दाख में पेनगोंग त्सो में जून 2020 में भारत–चीनी सैनिकों के मध्य वास्तविक नियंत्रण रेखा पर आकस्मिक भिड़ंत राष्ट्रीय एवं अंर्तराष्ट्रीय मंच पर वाद–विमर्श का कारण बनी। पेनगोंग घटना में चीनी सैनिकों सहित कई भारतीय सैनिक शहीद हुए। इस घटना ने समस्त भारतीयों को एक बार पुनः चीनी आक्रांतावादी एवं विस्तारवादी नीति के प्रति आक्रोशित कर दिया।

3 वर्ष पूर्व जून 2017 में भी चीनी सैनिकों ने इसी प्रकार सिक्किम के निकट डोकलॉम में भारतीय शांतिपूर्ण प्रयासों के समक्ष एक विकट गतिरोध स्थापित किया। डोकलॉम में यद्यपि किसी भी ओर से व्यक्तिगत क्षति नहीं पहुंची किन्तु इस वाद–विषय ने दोनो देशों की सेनाओं को युद्ध जैसी स्थिति के लिए अग्रसर कर दिया। पेनगोंग की दर्दनाक घटना ने जहाँ भारत–चीन के मध्य सहयोगात्मक आर्थिक एवं सांस्कृतिक संबधों को आघात पहुंचाया वहीं राजनीतिक एवं राजनय स्तर पर शांति प्रक्रिया को भी बाधित किया। 1962 युद्ध के पश्चात पहली बार जून 2020 में भारत–चीन सेनाओं की वास्तविक सीमा रेखा पर हिंसक भिड़ंत तथा सैनिकों की क्षति दोनों देशों के वैदेशिक एवं अंर्तराष्ट्रीय संबधों को नए रुप में अध्ययन के लिए प्रेरित करती है।

विषय की समसामयिकता को ध्यान में रखते हुए केन्द्र ने 'भारत–चीन संबंधः समसामयिक परिदृश्य एवं परिवर्तनीयता' विषय पर लेख आमंत्रित किये। ग्यारह उत्कृष्ट लेखों को सम्पादकीय

मंडल ने चयनित किया जो आप सभी के समक्ष एक प्रकाशित पत्रिका के रूप में उल्लेखित हो रहे हैं। ये समस्त लेख मौलिक होने के साथ–साथ भारत–चीन संबंधों एवं इनकी समसामयिकता तथा परिवर्तनीयता को विश्लेषित करने के प्रयास को भी प्रदर्शित कर रहे हैं। स्वतंत्र चिंतन पर आधारित लेखकों के विचार उनकी रचनात्मकता, सृजनात्मकता एवं मौलिकता को भी इंगित करते हैं।

वर्ष 2020 के संश्लेषण के इस जून माह के षष्ठम अंक में प्रकाशित लेखों पर पाठकों की प्रतिक्रियाओं के आधार पर ही हम जुलाई माह के अपने सप्तम समसामयिक तथा महत्वपूर्ण अंक में और अधिक गुणात्मक परिवर्तन लाने का प्रयास करेंगे।

संपादक मंडल

शुक्रवार, 31 जुलाई 2020

1

भारत–चीन सम्बन्धः चुनौतिया एवं मुद्दे

चित्रा राजौरा

शोधार्थी, रूस एवं मध्य–एशिया अध्ययन केंद्र, जवाहरलाल नेहरु विश्वविद्यालय

किसी भी राजनेता का कौशल इस बात से निर्धारित होता है कि वह विश्व राजनीति की बदलती शक्ति संरचना के अनुसार स्वयं और अपने देश को ढाल सके। जिस प्रकार अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति के यथार्थवादी विचारको का मानना है कि "अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति राज्यों के मध्य, कभी न समाप्त होन वाले शक्ति के लिए संघर्ष का प्रतोक है।" यह विचार आज भी मान्य है लेकिन रूप भिन्न है। जिस प्रकार चीन ने अपने लक्ष्य 2017 में यह घोषणा की है कि वह 2049 के मध्य तक एक वैश्विक प्रभुत्व वाले देश का दर्जा प्राप्त करने का इरादा रखता जो उसकी 'शक्ति की राजनीति और राष्ट्रीय हित' की नीति का अनुसरण करती है। दूसरी तरफ, स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद भारत और चीन सम्बन्ध की कहानी भारतीय नेताओ की आदर्शवादिता, स्वप्नदर्शिता तथा चीनी विश्वासघात की कहानी है। जिसका प्रथम उदहारण 20 अक्टूबर 1962 क युद्ध से प्रमाणित होता है। चीन के बर्बर हमले से मोह भंग होने के कारण भारत ने अपनी सुरक्षा तैयारियां तेज कर दी। यह आदर्शवाद एवं यथार्थवाद का अच्छा मिश्रण है।

पिछले कई वर्षो में अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति में बहुत सारे परिवर्तन हुए है। यह प्रश्न किया जाता है कि आज विश्व कोविड–19 महामारी से ग्रसित है तथा विश्व आर्थिक संकट का सामना भी कर रहे है। परन्तु इस संकट के दौरान चीन अपनी विश्व घेराबन्दी (बेल्ट एंड रोड इनिशिएटिव) तथा आर्थिक शासन की नीति की ओर अग्रसर रहा है। दूसरा, चीन भारत का सबसे बड़ा पडोसी देश है तथा यह एक ऐसा देश भी है जिसके साथ भारत भविष्य और एशिया की ओर उचित दिशा को परिभाषित कर सकता है। लेकिन अनेक पहलुओ से सम्बन्धो को समझने की जरूरत है दोनों देशो के समक्ष सीमा विवाद, गैर–कानूनी रूप से घुसपैठ, जल–विवाद क्षेत्रीय सहयोग के मुद्दे, चीनी–भारत सीमा के नजदीक भारतीय नागरिको का शोषण आदि को हल करने के लिए गम्भीर रूप से सोचने की आवयश्कता है। इस प्रकार चीन को अधिक गहराई से अध्ययन करने और समझने के लिए भारत को अपने स्वयं के राष्ट्रीय, विकासात्मक और सुरक्षा हितों को ध्यान में रखते हुए अपना दृष्टिकोण बदलना चाहिए।

वास्तव में भारत और चीन को अपने हितो को पूर्ण करने के लिए एक दूसरे की आवश्कता है। चीन आज भारत का दूसरा सबसे बड़ा व्यापारिक साझेदार और निवेशकर्ता है। भारत में बड़ी कीमत से बुनियादी ढ़ांचा परियोजनाओ की शुरुआत की है। आज विडम्बना यह बन चुकी है कि आर्थिक स्तम्भ आपसी रिश्तों को गति तो प्रदान करता है लेकिन वास्तव में रिश्ते का विकसित करने में एक अवरोधक बन चुका है। भारत और चीन के बीच व्यापारिक सम्बन्ध 2014–15 से 2018–19 की अवधि में एक बड़ा व्यापार घाटा $268.91 बिलियन था जोकि भारत की संचयी वैश्विक व्यापारिक घाटे 38 प्रतिशत था। 2019–2020 में यह व्यापार घाटा 48.7 बिलियन तक था। इसका मुख्य कारण सीमा पर से आयत इस अवधि में 7 प्रतिशत से $65 बिलियन कम हुआ है। यह दोनों देशो के बीच आर्थिक सम्बन्धो को पुष्ट करता है।

भारत-चीन व्यापार (डॉलर में)

S.No.	\Year	2014-2015	2015-2016	2016-2017	2017-2018	2018-2019
1.	**EXPORT**	11,934.25	9,011.36	10,171.89	13,333.53	16,752.20
2.	**IMPORT**	60,413.17	61,707.95	61,283.03	76,380.70	70,319.64
3.	**TOTAL TRADE**	72,347.42	70,719.31	71,454.93	89,714.23	87,071.84

स्रोत: https://commerce-app.gov.in/eidb/iecnt.asp

भारत के खिलाफ चीन ने आक्रमण 1962 में अनुचित रूप से किया गया था जिसके कारण दोनों देशो के बीच दरार पैदा होना शुरू हुई। बावजूद इसके, 1970 के दशक के बाद से दोनों देशो ने राजनीतिक स्तर पर पहल करने की शुरुआत की। 1979 में तत्कालीन विदेश मंत्री वाजपेयी द्वारा अधिकारिक स्तर पर चीन की यात्रा सम्पन्न की साथ ही सीमा विवाद को लेकर भी चर्चा की गयी थी। पूर्व–प्रधानमंत्री राजीव गाँधी द्वारा 1988 में चीन की यात्रा की। 20वी शताब्दी में सीमा–मतभेदों का हल निकलने तथा सीमा क्षेत्रो में शन्ति स्थापित करने के उद्देश्य से वास्तविक नियंत्रण रेखा (LAC) को बनाएं रखने के लिए CBMs पर उच्च–स्तर यात्राओं 1993 व 1996 में महत्वपूर्ण समझौते सम्पन्न किये थे। 2005 व 2013 के उपरांत अनुवर्ती समझौते किए ताकि सीमा क्षेत्रो पर शांति–स्थिति कायम रहे। लेकिन आज भी चीन द्वारा सीमा क्षेत्र पर हलचल जारी है। चीन के राष्ट्रपति शी जिनपिंग का 2014 में भारत का दौरा किया जिसमे उन्होंने दोनों देशों के बीच 'घनिष्ट विकास साझेदारी के निर्माण' पर सहमत हुए। अपने सम्बन्धो को गहरे करने के लिए 2015 को चीन में 'भारत आओ वष' के रूप में तथा 2016 को भारत में 'चीन आओ वर्ष' के रूप में नामित करने की घोषणा की। साथ ही सीमा विवाद के समाधान के लिए 2005 में

हस्ताक्षरित राजनोतिक पैरामीटर एव मार्गदर्शक सिद्धांतों व पंचशील समझौते के मध्य नजर राजनीति समाधान निकलने पर सहमत हुए। भारत के प्रधानमंत्री द्वारा चीन के साथ 9 बार उच्च–स्तरीय यात्रा सम्पन्न की गयी है। जिसमे से 2019, जी–20 समिट की वुहान यात्रा महत्वपूर्ण है।

चीन भविष्य में 'एक ग्रेट पॉवर' का दर्जा और अमेरिका के साथ उसकी समानता चाहता है इसलिए भारत को एक गंभीर प्रतिद्वन्दी के रूप में देखता है। चीन न केवल द्विपक्षीय मुद्दों पर बल्कि क्षेत्रीय और अन्तर्राष्ट्रीय मामलो में भारत का विरोध करता आया है। क्योंकि चीन अपना भारत से एकतरफा लाभ प्राप्त करने के लिए जहा भी सम्भव हो सके अपनी अटकले लगता है। जैसे पूर्वी एशिया शिखर सम्मेलन में भारत की सदस्यता का विरोध, शंघाई सहयोग संगठन में अनिच्छा, भारत का UNSC में स्थाई सदस्यता का असमर्थन, NSG, APEC में भारत की सदस्यता के लिए समर्थन की कमी आदि। इसके बावजूद भारत EAS और SCO का सदस्य बन चुका है। दूसरा 2017 में सिक्किम में डोकलाम सेक्टर में 73 दिनों के गतिरोध के बाद यह जी–20 के शिखर सम्मेलन (2019) के द्विपक्षीय सम्बन्धो के तनावों मे 'सुधारात्मक सुधार' लाने का प्रतोक माना जा रहा था। लेकिन चीन अपनी दोहरी नीति अपनाने से बाज नहीं आया जहा चीनी सीमा पर शांति बहाली के लिए शांति समझौते की दुहाई दे रहे थे। वहा साल 2019 में भारत द्वारा 370 अनुछेद को खत्म कर जम्मू–कश्मीर को केंद्र प्रशासित देश बना इसका प्रभाव चीन की बेल्ट–रोड इनिशिएटिव परियोजना पर पड़ रहा है क्योकि यह लद्दाख के भू–भाग वाले क्षेत्र जिस पर चीन ने अक्साई चीन कब्जा कर रखा है।

हाल ही, 20 जून 2020 में पूर्वी लद्दाख में गलवान घाटी में हिंसक झड़प (20 भारतीय जवान शहीद हुए) के बाद वास्तविक नियंत्रण रेखा के पास भारत चीन की सेनाएँ एक–दूसरे के सामने मोर्चा सम्भाले हुए थी। इस गतिरोध का कारण भारत की सीमा क्षेत्र पर चल रहे सड़क निर्माण को लेकर चीनी सैनिको द्वारा आपत्ति जताई गयी क्योकि चीन अपने लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए सैन्य अड्डों का निर्माण कर रहा है। हालाँकि, दोनों देशो के बीच सुलह की बातचीत सैन्य और कुटनीतिक दोनों स्तर पर जारी है। प्रधानमंत्री मोदी द्वारा इस स्थिति की समीक्षा के लिए 3 जुलाई 2020 को लेह के निमू (लद्दाख) का दौरा किया गया जिसमे उन्होंने कहा की "लद्दाख में भारत की जमीन पर आंख डालने वालों को सही जवाब दे दिया गया है। अगर भारत को दोस्ती निभानी आती है तो उसे ऐसे मौकों पर सही जवाब भी देना आता है। हमारे बहादुर सैनिकों ने यह साफ कर दिया कि वो किसी को भी भारत माता की आन पर आंच नहीं डालने देंगे।" तो

भारत में चीनी दूतावास सन विडोंग ने कहा "अतीत से चला आ रहा सीमा विवाद एक संवेदनशील और पेचीदा मुद्दा है। हमें समान परामर्श और शांतिपूर्ण बातचीत के जरिए उचित और तार्किक समाधान खोजने की आवश्यकता है जो दोनों को स्वीकार हो"।

चीन की इस प्रतिक्रिया पर भारत में कई विश्लेषकों द्वारा आलोचना की गयी है। भारत के इलेक्ट्रॉनिक, सूचना प्रोद्योगिकी और कानून व न्याय मंत्री रविशंकर प्रसाद द्वारा प्रभावशाली कदम के रूप में भारत की सुरक्षा, सम्प्रभुता, रक्षा और अखंडता को ध्यान में रखते हुए चीन की 59 मोबाइल ऐप पर प्रतिबन्ध लगाने का निर्णय किया गया, साथ ही भारतीय प्रधानमंत्री मोदी द्वारा "आत्म–निर्भर भारत" की घोषणा, "मेड इन चाइना" सामान का बहिष्कार आदि कदम उठाये गये है। यह सब निर्णय भारत चीन द्वारा अवैध रूप से हार्डवेयर और प्लेटफार्म के माध्यम से जानकारी प्राप्त करने की कोशिश के कारण लिया गया है। भारत सरकार द्वारा इस प्रकार की तनावपूर्ण गतिविधियों की जवाबी कार्यवाही के लिए अपने सीमा–विवादित क्षेत्रो पर बेहतर बुनियादी ढाचे और रोड कनेक्टिविटी के साथ–साथ संचार के विकास को अधिक सुगम बनाना चाहिए ताकि उचित समय में पडोसी देशो से सीमा पर लगातार होनी वाली घुसपैठ की गतिविधियों की जानकारी मिल पाए। भारत चीन को मुहतोड़ जवाब देने के लिए भारतीय सेना द्वारा भी अपनी नई युद्ध रणनीति को और अधिक मजबूत किया है लद्दाख और अरुणाचल प्रदेश में अपने मिलिट्री ढांचे को तैनात किये हुए है। फिलहाल, भारत को चीन के प्रति अपनी विदेश नीति को सुचारु रूप से पुनः परिभाषित और समीक्षा करने की आवश्यकता है।

अंतः अब यह देखना बाकि है कि इस घटना का अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर क्या प्रभाव पड़ेगा? भारत–चीन के बीच चल रहे तनाव से क्या भारत को चीन पर भरोसा करना चाहिए? जबकि चीन भारत को वास्तविक रूप से लाभकारी साझेदारी देश मानता है। वही दोनों देश एक–दूसरे की जरूरतों, लक्ष्यों और आकांक्षाओ को पूर्ण करने के लिए आवश्यक है। चीन द्वारा कोविड–19 के काल में सीमा–विवाद मुद्दों को एक तरफ रख कर महामारी से निपटने के लिए आपसी सहयोग को विकसित करने पर विचार करना जरुरी है।

♦♦♦♦♦

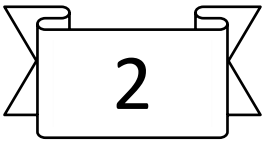

भारत और चीन के बदलते संबंध

अनिल कांबोज

प्रोफेसर, एन.डी.आई.एम.

डॉ रितु तलवार

प्रोफेसर, एन.डी.आई.एम.

चीन और भारत के बीच सांस्कृतिक और आर्थिक संबंध प्राचीन काल से हैं। सिल्क रोड न केवल भारत और चीन के बीच एक प्रमुख व्यापार मार्ग के रूप में कार्य करता है, बल्कि भारत से पूर्वी एशिया तक बौद्ध धर्म के प्रसार की सुविधा के लिए भी श्रेय दिया जाता है। द्वितीय विश्व युद्ध के दौरान, ब्रिटिश कब्जे वाले भारत और चीन दोनों ने इंपीरियल जापान की प्रगति को रोकने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई थी जब भारत स्वतंत्र हुआ, हमारे पहले प्रधान मंत्री जवाहरलाल नेहरू का मानना था कि भारत मित्र देशों से घिरा हुआ था और इसलिए, बाहरी आक्रमण से देश और इसकी सीमाओं को सुरक्षित करना उनकी सरकार के लिए तत्काल चिंता का विषय नहीं था। उन्होंने कहा कि ''वास्तव में, मुझे लगता है कि मैं यह कहने में न्यायसंगत हूँ कि इस व्यापक दुनिया में आज कोई ऐसा देश नहीं है जिसके साथ हमारे संबंध अनैतिक या शत्रुतापूर्ण कहे जा सकते हैं।'' चीन के मामले में भी, नेहरू चीनी पक्ष से सैन्य आक्रमण की कल्पना नहीं कर सकते थे, चाहे वह शांति से हो या युद्ध में। उस समय की सरकार ने महसूस किया कि सीमा की रक्षा करने का सबसे अच्छा तरीका एक मित्रतापूर्ण व्यवहार था। तब से चीन के साथ संबंध हमेशा उतार–चढ़ाव भरे रहे हैं। चीन पर कभी भरोसा नहीं किया जा सकता था। जैसा कि देखा गया है कि इसने भारत को हमेशा पीछे से हमला किया।

भारत चीन गणराज्य (ताइवान) के साथ औपचारिक संबंध समाप्त करने वाले पहले देशों में से था और मुख्यभूमि चीन की वैध सरकार के रूप में पीपुल्स रिपब्लिक ऑफ चाइना को मान्यता देता था। चीन और भारत एशिया में प्रमुख क्षेत्रीय शक्तियों में से दो हैं, और दुनिया में सबसे अधिक आबादी वाले देशों और सबसे तेजी से बढ़ती प्रमुख अर्थव्यवस्थाओं में से दो हैं। राजनयिक और आर्थिक प्रभाव में वृद्धि ने उनके द्विपक्षीय संबंधों के महत्व को बढ़ा दिया है।

समकालीन चीन और भारत के बीच संबंधों की सीमा विवादों की विशेषता रही है, जिसके परिणामस्वरूप तीन सैन्य संघर्ष हुए– 1962 का चीन–भारतीय युद्ध, 1967 में चोल घटना और 1987 का चीन–भारतीय झड़प। 2017 की शुरुआत में, दोनों देश विवादित चीन–भूटानी सीमा के साथ डोकलाम पठार पर भिड़ गए। हालाँकि, 1980 के दशक के उत्तरार्ध से, दोनों देशों ने राजनयिक और आर्थिक संबंधों को सफलतापूर्वक बनाया है। 2008 में, चीन भारत का सबसे बड़ा व्यापारिक भागीदार बन गया।

बढ़ते आर्थिक और सामरिक संबंधों के बावजूद, भारत और पी.आर.सी. के लिए कई बाधाएं हैं। भारत को चीन के पक्ष में व्यापार असंतुलन का सामना करना पड़ रहा है। दोनों देश अपने सीमा विवाद को हल करने में विफल रहे और भारतीय मीडिया आउटलेट्स ने बार–बार भारतीय क्षेत्र में चीनी सैन्य घुसपैठ की सूचना दी। दोनों देशों ने सीमावर्ती क्षेत्रों में लगातार सैन्य बुनियादी ढांचे की स्थापना की है। इसके अतिरिक्त, भारत पाकिस्तान के साथ चीन के मजबूत रणनीतिक द्विपक्षीय संबंधों के बारे में सावधान रहता है, जबकि चीन ने विवादित दक्षिण चीन सागर में भारतीय सैन्य और आर्थिक गतिविधियों के बारे में चिंता व्यक्त की है। 2014 में नरेंद्र मोदी के भारत के प्रधान मंत्री के रूप में कार्यभार संभालने के बाद CCP महासचिव और चीन के राष्ट्रपति शी जिनपिंग नई दिल्ली जाने वाले शीर्ष विश्व नेताओं में से एक थे। 2020 में, भारत–चीन राजनयिक संबंधों की 70 वीं वर्षगांठ, 70 कार्यक्रम दोनों देशों द्वारा मनाए जाने थे। कई अन्य गतिविधियों की भी योजना बनाई गई थी। लेकिन अब दोनों देशों के बीच बदलते माहौल के साथ क्या होगा, यह राजनयिकों द्वारा लगाए गए कूटनीतिक प्रयासों पर निर्भर करेगा।

कोविड–19 महामारी का रणनीतिक लाभ उठाते हुए, चीन अपनी विस्तारवादी नीति के साथ आगे बढ़ गया है। राष्ट्रपति शी जिनपिंग के पदभार संभालने के बाद, चीन के सामरिक हितों के लिए पूरे एशिया, हिंद महासागर में पूर्वी अफ्रीकी महाद्वीप तक फैले अपने सामरिक हित हैं। इसका क्रांतिकारी चरित्र केवल दो मूलभूत अवरोधों द्वारा संचालित होता हैः– रणनीतिक विफलता और रणनीतिक सफलता। रणनीतिक प्रतियोगिता ज्ञान से प्राप्त होती है ''कमजोरी के खिलाफ शक्ति केंद्रित करें''। जैसा कि भू–राजनीति और सैन्य रणनीति में होता है, प्रतियोगिता के पैटर्न में रणनीति के परिणामस्वरूप रिश्तों में अचानक और प्रमुख बदलावों के कारण अपेक्षाकृत लंबे समय तक प्राकृतिक समापन होता है।

यह युद्ध और शांति का सदियों पुराना पैटर्न है ''भले ही शांति के दौरान पूर्णता जारी है''। रणनीतिक प्रतियोगिता में जियो पॉलिटिक्स उस रिश्ते के संतुलन पर आधारित है जो शांति और युद्ध दोनों के माध्यम से जारी है। यह किसी भी पिछले संबंधों की परवाह नहीं करता है, लेकिन अपने स्वयं के हितों की परवाह करता है। चीन और भारत के बीच तनावपूर्ण सीमा–विवाद ने दक्षिण एशिया में अपने पड़ोसियों को परमाणु–सशस्त्र शक्तियों के बीच गोलीबारी से बचने के लिए सावधानीपूर्वक चलने के लिए मजबूर किया है।

विश्लेषकों के अनुसार, चीन भारतीय सीमा विवाद को इस तटस्थता को बनाए रखना कठिन हो जाएगा, भारत में कुछ लोग चीन के साथ अपने संबंधों के मूलभूत पुनर्विचार की वकालत करेंगे। यह पहली बार चीन–अमेरिका व्यापार युद्ध के बाद और वैश्विक महामारी के दौरान शुरू हुआ। भारत और चीन के बीच अधिक से अधिक तनाव ने उस संबंध के संतुलन को बदल दिया है जहां प्रत्येक राज्य चीन को भय और चिंता की अधिकता से देखता है।

कुछ विश्लेषकों के अनुसार, जब तक चीन और भारत के बीच शक्ति का संतुलन है, तब तक इन दक्षिण एशियाई देशों के लिए जगह रहेगी और उन्हें पक्ष चुनने के लिए मजबूर नहीं किया जाएगा। बेशक, कोई भी देश अपने शक्तिशाली पड़ोसियों द्वारा नियंत्रित होने की उम्मीद नहीं करता है, लेकिन यह सच नहीं है कि अगर चीन और भारत के संबंध बिगड़ते हैं तो ये देश चीन का स्वागत नहीं करेंगे।

बीजिंग और नई दिल्ली ने मई के शुरू में एक संघर्ष के बाद अपनी विवादित हिमालयी सीमा से पारस्परिक रूप से विघटन के लिए सहमति व्यक्त की, गालवान घाटी में 15 जून को एक घातक विवाद के साथ, पहली बार उनका सीमा–विवाद चार दशकों में घातक हो गया था। लेकिन भारत सरकार ने चीन के सामानों का बहिष्कार करने और चीनी निवेश को प्रतिबंधित करने के लिए 59 चीनी ऐप्स पर प्रतिबंध लगाने के साथ भारत के अंदर चीन विरोधी भावना को हवा दी है।

यह वर्तमान स्थिति, एक तरह से, भारत के पक्ष में है। यह सभी देशों के लिए एक सबक होन जा रहा है कि वे चीन पर ज्यादा निर्भर न रहें क्योंकि यह किसी भी समय अपने तार खींच सकता है। दूसरे, यह भारत को अपने स्वयं के उद्योग को विकसित करने और MSME को पुनर्जीवित करने में मदद करने जा रहा है। यह भारत को अतिमनिर्भर भारत की अपनी नीति में दृढ़ता से आगे बढ़ने में मदद करेगा। यह अपनी आपूर्ति श्रृंखला विकसित करने और किसी अन्य

देश पर निर्भर न होने के लिए प्रच्छन्न रूप में एक आशीर्वाद है। यदि भारत अपने पत्ते अच्छी तरह से खेलता है, तो निश्चित रूप से यह उन कंपनियों को आकर्षित करेगा जो चीन से बाहर जा रहे हं, भारत में आने और बसने और निवेश करने के लिए। समय दूर नहीं है, अगर भारत के लिए सब ठीक हो जाता है, तो भारत भू–रणनीतिक संतुलन में चीन से आगे होगा।

♦♦♦♦♦

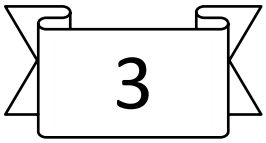

3

भारत–चीन संबंधों का परिवर्तित परिदृश्यः एक राजनीतिक वास्तविकता

सृष्टि

शोधार्थी, राजनीति विज्ञान विभाग, दिल्ली विश्वविधयालय

इतिहास साक्षी है कि भारत युद्ध के क्षेत्र में अपनों के कारणों से पराजित होता रहा है। अपने लोग प्रश्न करते है, सेना का मनोबल तोड़ते है। जनमानस को गुमराह करत है और हवाई सपना दिखाते है, और इसके परिणाम में भारत पराजित होता रहा है। आज पुनः वही परिदृश्य दोहराने का प्रयास किया जा रहा है।

प्रश्न उठाने वाले स्वनामधान्य नेता यदि पीछे मुड़कर देखे तो प्रश्नों के घेरे में उनके ही नाना–मामा दिखाई देंगे। अंग्रेजों की गुलामी से देश 1947 में स्वतंत्र हुआ। विभिन्न लोगों के कठोर आग्रह को अस्वीकृत कर जवाहर लाल नेहरू जी ने विभाजन को स्वीकृति दी, जिसके परिणाम को आज भी भारत सहन कर रहा है। प्रश्न इस पर उठना चाहिए, संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद का सदस्य बनने का अवसर किसने गंवाया? स्वतंत्र भारत के इतिहास में सन् 1962 काला धब्बा है। इसे प्रधानमंत्री नेहरू जी की अदूरदर्शिता का परिणाम कहा जा सकता है। चीन ने भारतीय सामरिक परिस्थितियों का सही आंकलन किया और आक्रमण कर दिया। भारतीय सेना को पराजय का सामना करना पड़ा और एकतरफा युद्ध विराम कर चीन ने 40 हजार वर्ग किमी. भारतीय भू–भाग पर नियंत्रण कर लिया। नेहरू जी ने न तो पराजय की जिम्मेदारी ली और न ही इस्तीफा दिया था। इसे विचित्र संयोग समझा जाए या सोची–समझी रणनीति का भाग माना जाए? प्रधानमंत्री नेहरू जी के जीवित रहने तक चीन ने अनेक लाभ उठाए। उनके निधन के पश्चात् वर्षों तक चीन से संबंध औपचारिक रहे। प्रधानमंत्री बनने के पश्चात् राजीव गांधी जी चीन की यात्रा पर गए। इसके पश्चात् चीन ने भारतीय सीमा में घुसपैठ की थी, डॉकलाम में जब चीन की हलचल बढ़ी थी, स्वयं राहुल गांधी चीनी राजदूत से मिले थे।

चीन की सेना पिछले दिनों अतिक्रमण के माध्यम से भारतीय सीमा के भीतर घुस गई। 1962 के युद्ध में चीन ने लद्दाख के एक बड़े भाग को अधिग्रहण कर लिया था, जिसे अक्साई चीन के नाम से जाना जाता है। यह भाग लद्दाख का था। यह परिवर्तन तिब्बत को हड़पने के पश्चात हुआ।

वर्षों से चीन भारत से लाभ उठाता रहा है, किन्तु भारत की वर्तमान सरकार पूर्व के वाद–विषयों पर बात करने के लिए तत्पर है और एसा करने की क्षमता भी उसमें है। चीन का वृहत आकार के होने के उपरांत भी उसकी समुद्री सीमा संकुचित है। इसलिए निरंतर हिन्द महासागर में अपनी पकड़ सुदृढ़ बनान के प्रयास में लगा हुआ है। साउथ–सी विवाद के घेरे में है। अमेरिका और चीन के पड़ोसी देश मल्लका स्ट्रैट पर चौकसी में लगे हुए है। चीन के व्यापार की जीवन–रेखा भी वही समुद्री सेतु है। वैकल्पिक व्यवस्था के रूप में चीन पाकिस्तान और म्यांमार की सहायता से हिन्द महासागर में अपनी पहुँच बनाने में सफल रहा है। यहीं से चीन का समुद्री विस्तार भी खाड़ी के देशों से होते हुए पूर्वी अफ्रीका तक पहुंचता है। भारत के पक्ष में अमेरिका ने चीन को घेरने की पूर्ण योजना बना ली थी। भारत के प्रधानमंत्री नेहरू जी ने अमेरिका की बात मान ली हाती तो आज तिब्बत स्वतंत्र होता। चीन द्वारा जो निरंतर कभी सिक्कम में डॉकलाम की सीमा पर तो कभी पूर्वी लद्दाख में गलवान वैली मे दिख रही है, वह स्थिति आज नहीं होती।

अमेरिका साम्यवादी चीन के पंख काटने को व्याकुल था, भारत को मात्र साथ देना था, सब कुछ अमेरिका कर रहा था। अतः भारत की सहायता से ही यह संभव हो सकता था, जिसे भारत के द्वारा अस्वीकार कर दिया गया था। 1950 से 1972 तक विरोध वैचारिक था, साम्यवाद एवं पूंजीवाद के मध्य वर्चस्व की लड़ाई थी, परंतु 2016 से लेकर 2020 के मध्य अस्तित्व का संघर्ष बन गया है। अमरिका किसी भी मूल्य पर चीन को विश्व का मूलपत्रक बनता नहीं देख सकता। इसके लिए वह किसी भी हद तक जाने के लिए तैयार है। अमेरिका के इस विचार को यदि कोई भी देश सार्थक सहायता देने की स्थिति में है, तो वह भारत ही है। भारत की भी चीन को क्षीण करने में अपनी आवश्यकताएं है। कोरोना ने भू–राजनीतिक स्थिति उत्पन्न कर दी है, जिसमें चीन की तीव्रता को मात्र रोका ही नहीं जा सकता, अपितु तोडा भी जा सकता है और उसके लिए तिब्बत से उत्तम कोई और विषय नहीं हो सकता है। भारत–अमेरिका संबंध को चीन अपने लिए खतरे के रूप में देखता रहा है।

आधुनिक चीन के निर्माता माओत्से तुंग ने कहा था कि "तिब्बत चीन के लिए दंत सुरक्षा का काम करता है, जब तक दंत श्रृंखला मजबूत है, जिह्ववा सुरक्षित होगी, परंतु इसमें दरार पड़ते ही बाहरी शक्तियां चीन पर हावी हो जाएगी"। यह भय चीन को आज भी बना हुआ है। चीन के साथ संबंधों को उत्तम बनाने के लिए भारत की और से बार–बार प्रयास किया गया। प्रधानमंत्री

मोदी जी ने अपने प्रथम कार्यकाल में पूर्व प्रधानमंत्री स्व. अटल बिहारी बाजपेयी जी की कही बातों पर चलने का प्रयास किया। बाजपेयी जी ने कहा था कि "दोस्त बदला जा सकता है, लेकिन पड़ोसी नहीं"। इसी स्वरूप में मोदी जी ने चीनी राष्ट्रपति को भारत आमंत्रित कर उनका भव्य स्वागत किया।

किसी भी लोकतांत्रिक देश का निर्णय तो सरकार ही करती है, परंतु ऐसे समय में पूरे देश को विश्वास में लेना एवं एकजुट करना आवश्यक होता है। इसो स्वरूप में चीन के विषय पर सर्वदलीय बैठक निसन्देह रूप से महत्वपूर्ण मानी जाएगी। सर्वदलीय बैठक में ममता बैनर्जी ने कहा कि "हम सबको साथ मिलकर काम करना है, भारत जीतेगा चीन हारेगा, एकता से बात करे, एकता की बात करे, एकता से ही काम करे। इसी प्रकार शिवसेना अध्यक्ष और महाराष्ट्र के मुख्यमंत्री उद्धव ठाकरे ने कहा कि "भारत शांति चाहता है, परंतु इसका अर्थ यह नहीं की हम कमजोर है, भारत मजबूत है मजबूर नहीं"। सभी ने चीन के विरुद्ध सरकार पर पूर्ण विश्वास होने की बात कहते हुए स्पष्ट कहा कि हम एकजुट है और रहेंगे। इस प्रकार सर्वदलीय बैठक से निकली एकजुटता और चीन से प्रत्येक स्तर पर निपटने के संकल्प ने देश के वातावरण को अधिक सकारात्मक बनाया है।

इस प्रकार भारत ने स्पष्ट कर दिया है कि देश के मान–सम्मान के लिए वह कोई समझौता नहीं कर सकता है। भारत ने भी विभिन्न मोर्चों पर अपनी सक्रियता बढ़ा दो है। चीन को कूटनीतिक, आर्थिक एवं सामरिक क्षेत्र में घेरने की रणनीति बनाई जा रही है। रेलवे ने भी चीनी कंपनी को दिए गए ठेके को रद्द कर दिया, तो दूरसंचार विभाग ने भी बी.एस.एन.एल. व एम.टी.एन.एल. को चीनी वस्तुओं का कम से कम प्रयोग करने के निर्देश दिए है। चीनी वस्तुओं के बहिष्कार व भारतीय वस्तुओं के उपयोग को बढ़ावा देने के लिए "भारतीय समान हमारा अभियान" अभियान प्रारंभ किया है। अभियान के प्रथम चरण में कैट (कंफेडरेशन ऑफ ऑल इंडिया ट्रेडर्स) न 500 से अधिक वस्तुओं की सूची तैयार कर उसका बहिष्कार करने का निर्णय लिया है। कैट ने दिसंबर 2021 तक चीनी आयात में लगभग एक लाख करोड़ रुपये की कमी लाने का लक्ष्य रखा है।

अतः प्रधानमंत्री जी स्पष्ट कर चुके है कि हम भारत की संप्रभुता एवं क्षेत्रीय अखंडता सुनिश्चित करने को लेकर प्रतिबद्ध है। इसके लिए हम परिस्थितियों के अनुसार कार्यवाही के लिए तैयार

रहते है। चीन को यह बताना आवश्यक है कि ताली एक हाथ से नहीं बजती। वह भारतीयों हितों का अनदेखा करेगा तो भारत भी स्वयं की रक्षा करने को स्वतंत्र है। आत्मनिर्भर भारत के प्रधानमंत्री मोदी जी के मंत्र पर अग्रसर होते हुए चीनी कम्पनीयों को बाहर का मार्ग दिखाया जाना चाहिए।

♦♦♦♦♦

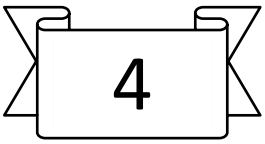

भारत–चीन संबंधः क्या पड़ोसी बदला जा सकता है?

प्रियंका बारगल

शोधार्थी, अथर्शास्त्र अध्ययनशाला, देवी अहिल्या विश्वविद्यालय, इंदौर

हितेन्द्र बारगल

सहायक प्राध्यापक, शासकीय महाविद्यालय, गुनौर

भारत के पूर्व प्रधानमंत्री अटल बिहारी बाजपेयी के द्वारा कहे गए उक्त वाक्य का संबंध भले ही हमारे पड़ोसो देश पाकिस्तान के संदर्भ में रहा हो, किंतु उक्त वाक्य का महत्त्व चीन के साथ हमारे पारस्परिक रिश्तों पर भी देखने को मिलता है। अगर दो मित्रों के बीच विवाद हो जाए, तो हो सकता है, कि हम अपने मित्र बदल ले, पर हम हमारे पड़ोसी को कभी नहीं बदल सकते।

कई सालों तक तिब्बत एक ऐसा देश रहा है, जिसके कारण भारत और चीन अलग–अलग भौगोलिक क्षेत्र में शांति से रहे, किंतु 1950 में चीन द्वारा तिब्बत पर कब्जा किए जाने के पश्चात इन दोनों देशों के मध्य संबंध विवादपूर्ण हो गये। भारत और चीन दोनों एक सीमा रेखा साझा करने वाले पड़ोसी देश है। इन दोनों देशों के बीच 1 अप्रैल 1950 को राजनयिक संबंध स्थापित हुए थे, जब चीन 1949 में स्वतंत्र हुआ एवं भारत 1947 में। भारत पहला गणतंत्र देश है, जिसने साम्यवादी देश चीन के साथ अपना दोस्ताना व्यवहार रखा। भारत और चीन के बीच महत्वपर्ण समझौता वर्ष 1956 में नेहरू और झोउ एनलाई के बीच "हिंदी चीनी भाई–भाई" के नारे के साथ एवं संधि पर हस्ताक्षर करने के साथ हुआ।

इन दोनों देशों के बीच संबंध तिब्बत के कारण तनाव पूर्ण होना शुरू हुए, जबकि 1959 में तिब्बती प्रमुख दलाई लामा हिमाचल प्रदेश के धर्मशाला में बस गए, इसके बाद चीन द्वारा भारत पर तिब्बत और पूरे हिमालय क्षेत्र पर विस्तार करने का आरोप लगाया गया था, जो सही नहीं था। वर्ष 1962 में चीन ने इन दोनों देशों के बीच खींची गई सीमा रेखा मेकमोहन रेखा को पार करते हुए, भारत पर आक्रमण कर दिया। इस तरह समय के साथ पड़ोसी देश चीन से हमारे संबंध खराब होते चले गए। इसमें सुधार हेतु समय–समय पर हमारे यहां प्रधानमंत्रियों ने पहल

की, तथा द्विपक्षीय वार्ताओं व यात्राओं के अलावा अनौपचारिक सम्मेलनों का आयोजन करते हुए हम हमारे पड़ोसी देशों के साथ शांति स्थापित करना चाहते हैं, क्योंकि पड़ोसी बदला नहीं जा सकता। पूर्व प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेयी द्वारा कहे गए उक्त शब्द के माध्यम से हम यह कह सकते हैं कि इस दुनिया में ऐसा कोई विवाद या परेशानी नहीं है जिसका की बातचीत के द्वारा हल निकाला ना जा सके। अगर हम अपने देश में शांति चाहते हैं, तथा वाणिज्यिक गतिविधियों को सफलतापूर्वक संचालित करते हुए, अंतराष्ट्रीय व्यापार को बढ़ावा देकर देश का आर्थिक विकास करना चाहते हैं, तो हमें हमारे पड़ोसी देशों से संबंधों में सुधार करना हो होगा। दो देशों के बीच अंतराष्ट्रीय व्यापार के प्रमुख क्षेत्रों में एक शर्त यह भी है कि जिस देश में किसी वस्तु की उत्पादन लागत कम है, वह वस्तु निर्यात कर दी जाए तथा जिसकी उत्पादन लागत अधिक हो वह वस्तु आयात कर ली जाए। चीन और भारत के आर्थिक संबंधों की तरफ गौर करें, तो इनके बीच होने वाला व्यापार 2019 में बढ़कर 92.68 बिलियन डॉलर हो गया है। भारत में ई–कॉमर्स, इलेक्ट्रॉनिक्स तथा अन्य क्षेत्रों में 1000 से भी अधिक चीनी कंपनियों ने निवेश किया हुआ है, वहीं दूसरी तरफ भारतीय कंपनियां भी चीन में अपना विस्तार करते हुए लाभ कमा रही है। रक्षा संबंधों के बारे में बात की जाए, तो भारत तथा चीन के बीच "हैंड इन हैंड" संयुक्त आतंकवादरोधी अभ्यास आयोजित किए जाते हैं, जिसका लाभ दोनों देशों की सेनाओं को प्राप्त होता है। चीन के राष्ट्रपति शी जिनपिंग की भारत यात्रा के पश्चात दोनां देशों के आर्थिक सहयोग को बढ़ावा मिला है, तथा कुछ सीमा तक आपसी मतभेदों को दूर करने की कोशिश की गई है। दोनों देशों के मध्य ''सिस्टर सीरीज'' और प्रांतों के 14 जोड़ें स्थापित किए गए हैं। चीन के फुजीयान प्रांत और तमिलनाडु को ''सिस्टर स्टेट'' तथा चिन झोंउ एवं चेन्नई नगर को ''सिस्टर सीरीज'' के रूप में विकसित किया जा रहा है।

वर्तमान संदर्भ में अगर हम भारत–चीन के संबंधों को ले तो यहां हमें यह कहना उचित जान पड़ता है, कि भले ही आप अपना घर साफ सुथरा रख ले पर अगर पड़ोसी के यहां कचरा या बीमारी हो तो हम चाह कर भी अपने आप को सुरक्षित नहीं रख पाएंगे क्योंकि जीवाणु या वायरस रूपी दुश्मन वायु, जल या अन्य किसी माध्यम से हमारे घर में घुस ही आएगा जो हमारे लिए खतरा बन सकता है। जैसे वर्तमान काल कोरोना का काल है, और इस महामारी का केंद्र चीन को ही बताया जा रहा है और वर्तमान में भारत चीन का पड़ोसी देश होने के नाते इससे सबसे ज्यादा नुकसान झल चुका है, तथा झेल भी रहा है।

किंतु साथ ही साथ जिस तरीके से चीन ने आत्मनिर्भरता प्राप्त करते हुए अपने आप को विकसित देशों की श्रेणी में खड़ा कर लिया है, उसी तरह अगर भारत भी प्रयास करें , तो वह दिन दूर नहीं जब भारत और चीन साथ साथ मिलकर अच्छे पड़ोसियों की तरह दक्षिण एशिया के महत्वपूर्ण देश के रूप में उभर कर आ सकते हैं। अगर हम अपने घर में शांति चाहते हैं तो हमें अपने पड़ोसी के साथ शांति पूवक संबंध स्थापित करना ही पड़ेंगे, वैसे ही अगर हम विश्व में शांति चाहते हैं, तो हमें अपने पड़ोसी देशों के साथ सौहार्दपूर्ण संबंध एवं व्यवहार स्थापित करने होंगे। भारत और चीन का संबंध अभी का नहीं वरन् बहुत प्राचीन है। प्राचीन समय में कनिष्क द्वारा सिल्क रुट का प्रयोग करते हुए भारत और चीन संबंधों को मजबूती प्रदान की गई थी, वही बौद्ध धर्म का विकास भी इन दोनों देशों में समान रूप से हुआ तथा बौद्ध भिक्षुओ के कारण इन दोनों देशों के मध्य शैक्षणिक एवं बौद्ध सांस्कृति का आदान–प्रदान होता रहा हैं।

वर्तमान संदर्भ की बात की जाए तो चीन द्वारा आए दिन भारत की सीमा पर घुसपैठ की कोशिश की जा रही है, और नई बात यह है कि अब यह कोशिश एक ही स्थान से ना होकर एक साथ अनेक स्थानों से की जा रही है। इन दोनों देशों के विवादों को सुलझाने का एक रास्ता आपसी बातचीत का है और दोनों देशों द्वारा यह प्रयास किया भी जा रहा है। पिछले दो वर्षों में इन दोनों देशों के बीच दो अनौपचारिक शिखर वार्ता हो चुकी है।

प्रथम अप्रैल 2018 में चीन के वुहान शहर में तथा द्वितीय भारत के चेन्नई शहर में मम्ममलपुर में। दो पड़ोसो देशों के बीच सीमा विवाद कोई नवीन विवाद नहीं है। यह विवाद अक्सर विश्व के कई देशों में देखने को मिलते हैं। अगर भारत और चीन के संबंध में इसका समाधान निकालना है, तो हमें निम्न बातों पर अमल करने की कोशिश की जानी चाहिएः–

- दोनों देशो के नेताओ का आपसी सम्बन्ध सुधरने हेतु रणनोति बनानी चाहिए।
- दोनों देशों को सर्वसम्मति के साथ बैठक करते हुए अपने–अपने क्षेत्रों के नक्शे एक दूसरे को आदान–प्रदान कर देना चाहिए, तथा इन नक्शों पर खींची गई सीमाओं की अवहेलना या अतिक्रमण से बचना चाहिए।
- अंतराष्टोय व्यापार की बात करें तो, भारत–चीन व्यापारिक संबंध में भारत–चीन से ज्यादा माल खरीद रहा है, तथा उसे कम माल बेच रहा है, अतः इस असंतुलन को दूर करने की आवश्यकता है। इस हेतु भारत में जिन वस्तुओं का उत्पादन अधिक होता है, जैसे दवाइयां, चावल, चीनी, मांस, कपड़ा, मिर्च और तंबाकू की पत्तियां इत्यादि चीन को बेच सकता है। इसके अलावा अगर हम सेवाओं की बात करें, तो भारत द्वारा चीन को आई.टी. एवं

इंजीनियरिंग की सेवा दी जा सकती है। इस तरह दोनों देशों द्वारा अगर समान रूप से वस्तुओं व सेवाओं का आदान–प्रदान किया जाए, तो दोनों देश समान रूप से लाभान्वित हो सकेंगे। चीन को भी अपनी विस्तारवादी नीतियों को समाप्त करने की आवश्यकता है, तथा पाकिस्तान को भारत में आतंकवाद को बढ़ावा देने के लिए दी जाने वाली आर्थिक मदद को खत्म करने की जरूरत है।

अंत में निष्कर्ष के रूप मं हम कह सकते हैं कि भले ही हम अपने पड़ोसी को बदल नहीं सकते, पर हम आपसी बातचीत के द्वारा किसी भी समस्या का हल निकालते हुए अपने संबंधों को सुधार सकते हैं।

♦♦♦♦♦

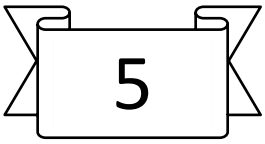

विस्तारवादः सिनो सत्ता का अंतिम चरण

प्रीति यादव

प्रवक्ता, राजनीति विज्ञान, दिल्ली शिक्षा निदेशालय

शीतयुद्ध की समाप्ति के उपरांत पाश्चात्य विचारकों द्वारा ''पूंजीवादी अजयेता'' का नारा दिया गया। विशेष कार्य फ्रांसिस फुकुयामा ने अपनी ''द एंड ऑफ हिस्ट्री'' सिद्धांत के प्रतिपादन से किया, जिसके द्वारा उन्होंने साम्यवाद को कब्रगार कर दिया। इस सिद्धांत के कटाक्ष में, फुकुयामा के शिक्षक एस. पी. हंटिंगटन ने **"Clashes of Civilizations"** सिद्धांत प्रतिपादित किया। एस. पी. हंटिंगटन ने शीत युद्ध उत्तरोत्तर विश्व की संरचना के विश्लेषण का प्रयास किया। उनका कथन था ''इतिहास का अंत नही होता बल्कि पुनरावृति होती है'' उनके अनुसार संपूर्ण इतिहास सभ्यताओं के संघर्ष की गाथा है तदनुरूप शीतयुद्ध में विचारधाराओं का संघर्ष उत्तर शीतयुद्ध काल में सभ्यताओं के संघर्ष की जननी बनेगा। हंटिंगटन ने अपने कार्य में 9 मुख्य सभ्यताओं का वर्णन किया जिनका प्रतिनिधित्व पांच केंद्रीय राष्ट्र करते हैं–(क) पाश्चात्य–अमेरिका, (ख) सिनिक–चीन (ग) हिंदू–भारत (घ) जापानी–जापान (ड) ऑर्थोडॉक्स–रूस।

हंटिंगटन के अनुसार उत्तर शीतयुद्ध काल के संघर्ष दो प्रकार के होंगे– केंद्रीय संघर्ष एंव परिधि संघर्ष। **"Clashes of Civilizations"** कार्य 1993 में प्रकाशित हुआ। परंतु 9/11 की घटना ने इसको चर्चा में ला दिया जब पहली बार अमेरिका और इस्लामिक विश्व का संघर्ष देखने को मिला। हंटिंगटन का इस संघर्ष के संदर्भ में मानना था कि इस्लामिक संघर्ष नियंत्रित एवं सीमांकित है परंतु मुख्य चुनौती ''सिनो संघर्ष'' की है जो एक केंद्रीय सत्ता है। हंटिंगटन की वैश्विक शांति के लिए भूतपूर्व चेतावनी वर्तमान में वास्तविक रूप धारण कर चुकी है जो सिनो वर्चस्व के रूप में नवीन सम्राज्यवादी पैराडाइम को जन्म दे रही है।

सिनो सुपर पॉवर–आर्थिक, सामरिक एवं कूटनीतिक आयाम

क) आर्थिक शक्ति के रूप में चीन विश्व की दूसरी सबसे बड़ी अर्थवयवस्था, **PPP** के अनुसार प्रथम अर्थव्यवस्था, विश्व व्यापार में योगदान के आधार पर प्रथम अर्थव्यवस्था, वैश्विक संपत्ति

संकेद्रण में प्रथम स्थान (ग्लोबल वैल्थ रिपोर्ट 2019), एवं FDI निवेश प्राप्ति में प्रथम। यह समस्त आंकड़े चीन की क्रांतिकारी आर्थिक रफ्तार को प्रदर्शित करती है। जिसने संपूर्ण विश्व को अपने आर्थिक एवं व्यापारिक जाल में जकड़ लिया है।

ख) जोसेफ नाई ने अंतरराष्ट्रीय व्यवस्था में तीन प्रकार की शक्तियां बताई– हार्ड पॉवर, सॉफ्ट पॉवर और स्मार्ट पॉवर। इन तीन शक्तियों के अतिरिक्त उनको जिस शक्ति के प्रयोग की चिंता थी वो ''शार्प पॉवर'' है। यह अधिनायकवादी सत्ता द्वारा उदारवाद एवं लोकतंत्र के विरूद्ध प्रयुक्त शक्ति है। ''वन बेल्ट वन रोड'' योजना, राष्ट्रों की आंतरिक संप्रभुता में हस्तक्षेप (ऑस्ट्रेलिया के उ्चाधिकारियों की खरीद–फरोख्त), डेट डिप्लोमेसी (भारी मात्र में देशों को ऋण देकर उनकी विदेश नीति में हस्तक्षेप) इत्यादि शार्प पॉवर के प्रयोग से दुराचारी चीनी कूटनीति का उदाहरण है।

ग) सामरिक शक्ति के रूप में विश्व का तीसरा सबसे बड़ा सैन्य दृष्टिकोण से संपन्न राष्ट्र, UNSC का स्थाई सदस्य, NSG का सदस्य, UNATA का सदस्य एवं निरंतर परमाणु शस्त्रों का बढ़ता संग्रह (320 न्यूक्लियर वारहेड SIPRI रिपोर्ट 2020) चीन की ताकत की पहचान है।

विस्तारवाद का चरण–आत्मघाती चक्रव्हयू

1980 की ग्रेट लीप फॉरवर्ड नीति के बल पर पिछले 4 दशकों मं चीन सुपरपावर के रूप में उभरा आर्थिक, कूटनीतिक एवं सामरिक रूप से प्रबल होने के उपरांत से चीन ने सिनिक सभ्यता के साम्राज्य को पुनःजीवित करने के सपने को जीना आरंभ कर दिया है, जिसके लिए यह आधुनिक राष्ट्र–राज्य के बहुध्रुवीय विश्व में विस्तारवाद का चक्रव्ह्यू रच रहा है। चीन दुनिया का चौथा सबसे बड़ा देश, अपने 14 पड़ोसियों के साथ 22,000 sqkm की सीमा साझा करता है, आश्चर्य का विषय, कि सभी पड़ोसियों के साथ चीन का सीमा विवाद है। हाल की दिनों में ये सीमा विवाद अत्यंत ज्वलंत और व्यापक हुआ, चर्चित प्रमुख निम्न है–

क) भारत–चीन सीमा कि मैकमोहन रेखा चीन द्वारा कभी नहीं स्वीकारी गई, LAC का निरंतर उल्लंघन, ट्रांस हिमालय क्षेत्र के भारतीय राज्यो– अरुणाचल प्रदेश, सिक्किम, लद्दाख (गलवान घाटी, पेंगोंग सो झील, चीन अधिकृत लद्दाख) पर अनाधिकृत अधिकार का दावा।

ख) रूस के साथ चीन 4,800 kmsq की सीमा साझा करता है। परंतु चीन पूर्वी रूस के 1,60,000 kmsq के वोलादिवोस्टोक शहर को अपना भाग मानता है।

ग) जापान द्वारा हाल ही मे चीन के साथ विवादित अपने द्वीप सेनकाकस पर अधिकार मजबूत करने हेतु विधायक पारित किया गया, परंतु चीन इन द्वीप समूह को दियाओयुस नाम से पुकारता है और चीनी साम्राज्य का अंग मानता है।

घ) नेपाल का जब भारत के साथ कालापानी क्षेत्र को लेकर मतभेद पैदा हुआ तो दूसरी और चीन ने नेपाल के साथ साझा हो रही 1,415 kmsq की भूमि को तिब्बत का भाग करार करते हुए अधिकार का दावा किया।

ड) भूटान के साथ 2017 में डोकलाम विवाद के पश्चात हाल ही में 'ग्लाबल इन्वायरमेंट फैसिलिटी काउंसिल' की 58वीं बैठक में चीन ने भूटान के 'साटेंग वन्यजीव अभयारण्य' की जमीन को विवादित बताया।

च) चीन द्वारा स्वयं के स्वायत्त प्रसाशनिक क्षेत्रों पर तानाशाही की जा रही है, जिसमें हांगकांग में 1997 से स्थापित स्पेशल एडमिनिस्ट्रेशन व्यवस्था को समाप्त करना, जिंगजियांग प्रांत में मुस्लिमो के साथ नस्लीय अत्याचार एवं तिब्बत पर 13 वीं शताब्दी से आधिपत्य।

छ) दक्षिण चीन सागर में ASEAN देशों के साथ संघर्षय चीन द्वारा ''नाइन डेश लाइन'' की असंगत अवधारणा के आधार पर दक्षिण चीन सागर के 80 प्रतिशत क्षेत्र को अपना अधिकार क्षेत्र बताया जाता है।

इन प्रमुख सीमा विवादों के अतिरिक्त चीन के कुल मिलाकर 23 देशों से सीमा विवाद चल रहे हैं, जिसमें वह सांस्कृतिक एवं ऐतिहासिक आधार पर विस्तारवाद की कूटनीति को बढ़ा रहा है। कहावत है– ''शक्ति सर्वोच्च नशा है''। चीन भी 4 दशकों में अर्जित शक्ति के नशे में लिप्त है जिस वो नियंत्रित नहीं कर पा रहा है। अब अपनी आर्थिक, सामरिक और कूटनीतिक शक्ति के सहारे साम्राज्यवादी शक्ति के चरण पर है। ''ड्रगिस्ट ड्रैगन'' विस्तारवाद के प्रयास में स्वयं को पतन की ओर ले जाएगा। विश्व स्तर पर चीन के विरूद्ध मोर्चाबंदी आरंभ हो चुकी है। कोरोना संकट के लिए जवाबदेहिता, भारत की डिजिटल स्ट्राइक, अमेरिका–चीन ट्रेड वॉर, इंडो पैसिफिक स्ट्रेटजी इत्यादि। समकालीन विश्व बहुध्रुवीय है, जहां सत्ता के अनेकों नए केंद्र है, इस वैश्विक संरचना में किसी एक राष्ट्र द्वारा सत्ता के मद में लिप्त होकर विस्तारवाद का साहस उसके विकास का अंतिम चरण सिद्ध होगा। जिस प्रकार लेनिन ने कहा था– साम्राज्यवाद, पूंजीवाद का अंतिम चरण है। उसी के समनुरूप विस्तारवाद, सिनो सत्ता का अंतिम चरण सिद्ध होगा।

♦♦♦♦♦

6

सीनो, सहयोग और संघर्ष– वैश्विक व्यपार के संदर्भ में

रजनी

शोधार्थी, राजनीति विज्ञान विभाग, दिल्ली विश्वविद्यालय

चीन के साथ भारत के 1962 में होने वाले युद्ध के उपरांत हुए समझौते में चीन और भारत के मध्य संबंधों में मधुरता देखने को मिलती रही हैं। जहाँ चीन दुनिया में जनसंख्या की दृष्टि से प्रथम स्थान रखता है वहीं भारत भी चीन के बाद दूसरे स्थान पर है, जिसका लाभ दोनों ही देशो को प्राप्त हुआ। क्योंकि चीन और भारत की जनसंख्या पूरे विश्व के लिए उपभोक्ता के रूप में देखी जाने लगी। परंतु समकालीन समय में यह स्थिति परिवर्तित हो चुकी है जिसका कारण कोरोना संकमण और अभी हाल ही में हुए सीमा विवाद और भारतीय सैनिकों के शहीद होने के कारण है। अभी तक भारत में चीन की स्थिति अधिक मजबूत रही है जिसके पीछे का कारण चीनी उत्पाद है उदाहरणस्वरूप मोबाइल फोन, एप्प, लाईटे, बैटरी इत्यादि जिसकी चका–चौंध से भारत क सभी राज्यों जैसे दिल्ली हर त्यौहार पर चमकने लगती है फिर भले ही वो होली के त्यौहार पर बिकने वाले रंग हो या पिचकारी, या फिर दिवाली पर बिकने वाली रंग–बिरंगी लाईटे हो या फिर सजावट के लिए प्रयोग की जाने वाली वस्तुएं।

यहां तक कि त्यौहार न होने पर भी दिल्ली के चांदनी चौक, कमला नगर, सरोजिनी नगर, दरियागंज, सदर बाजार, लाजपतराय मार्किट, खान मार्केट एवं ऐसे अन्य राज्यों में जैसे राजस्थान में बाबू बाजार, इंदिरा मार्केट, मुम्बई में मुहम्मद अली रोड, स्ट्रीट मार्केट, वहीं साउथ भारत में डाबा गाडर्न वहीं उत्तर–प्रदेश, और अन्य राज्यों में भी इस प्रकार की बड़े बाजार देखने को मिलते है। जहां भारत के स्थानों ने चीन के उत्पाद को पूर्ण रूप से स्थान दिया हुआ है जिसका कारण चीन की तकनीकी में वृद्धि और अमेंरिका जैसे बड़े देशो के साथ प्रतियोंगिता में आगे होने के कारण है क्योंकि अभी हाल ही में चाईना के द्वारा लाई गई इंटरनेट में 5 जी की तकनीकी जिसने सभी को मात दे दी।

जैसा कि हिमालय में एक ''हिंसक चेहरा'' पिछले हफ्ते सोमवार का लद्दाख की गलवान घाटी में सीमा के साथ हुआ, जहां भारत और चीन के सैनिक मई से गतिरोध में बंद हैं जिस कारण हाल

के हफ्तों में, भारत में चीन विरोधी भावना बढ़ी है, जिसमें लोग देश में चीनी उत्पादों के बहिष्कार का आह्वान कर रहे हैं। लेकिन विशेषज्ञों का कहना है कि भारत के लिए अपने पड़ोसी के साथ व्यापार और आर्थिक संबंधों को अचानक से कम करना मुश्किल होगा।

भारत ने वर्ष 2019 में फरवरी से अप्रैल के बीच चीन से 62 बिलियन डॉलर से अधिक का सामान आयात किया, और लगभग 15.5 बिलियन डॉलर के उत्पादों का निर्यात किया, "जहां तक व्यापार और आर्थिक निवेश संबंध हैं, दोनों देशों के बीच अब एक दूसरे का जोड़ने का एक बहुत ही जटिल माध्यम है। भारत का चीन के बाजार को स्थान देने का एक अन्य कारण चीन की तकनीकी और उसके सामान की कीमत का सस्ता होना है। जिसे भारत का गरीब से गरीब व्यक्ति भी उचित दाम में ले सकता है और प्रयोग कर सकता है। इसका लाभ यह रहा कि भारत और चीन के लोगो को रोजगार में अवसर उपलब्ध हो रहे थे।

कोविड–19 के कारण वर्तमान समय भारत के लिए गम्भीर चुनौतीपूर्ण है तो वहीं चीन के साथ संबंधो और उसके द्वारा दी जाने वाली सेवाओं को समाप्त करना भी एक गम्भीर चुनौती है। चीन के द्वारा किए गए आघात के कारण भारत का चीन के विरूद्ध खड़े होने के कई कारण हैं– उन्होंने स्थानीय विनिर्माण को मार दिया है, वर्तमान में भारतीय जो कुछ भी खरीद रहे हैं वह चीन से आता है, यह राष्ट्र को निर्भर बनाता है, और बदले में, सीसीपी को सशक्त बनाता है और चीन हर वैश्विक मंच पर पाकिस्तान की मदद करता है और भारत के खिलाफ मोर्चा लेता है। यह भारत पर दबाव बनाए रखने के लिए हथियारों, गोला–बारूद, प्रौद्योगिकी, मशीनरी की आपूर्ति करता है और वित्तीय सहायता प्रदान करता है। नतीजतन, यह कश्मीर में युद्ध और भारतीय सैनिकों और नागरिकों की मृत्यु का कारण बन रहा है और हमारी संप्रभुता को खतरे में डालना और पाकिस्तान और नेपाल के साथ मिलकर हमें अलग करना चाहता है।

भारत चीन को 13.5 मिलियन किलोग्राम चाय का निर्यात करता आ रहा है जो श्री–लंका से आगे निकल गया है जो पहले चीन को चाय आयात में अग्रणी था। वहीं हीरो साइकिल ने 900 करोड़ का चीनी सौदा रद्द किया। जिसें आत्मानिर्भर भारत 'मिशन के तहत भारत को रोजगाार और आत्मनिर्भर बनाने के लिए आढ़तियों के निर्माण से इस तरह की पहल निश्चित रूप से क्रांति को गति देगी। जिससे राजस्व में कमी भी कम होगी।

हालांकि, ई–कॉमर्स कंपनियों ने इन दिशानिर्देशों को लागू करने के लिए और समय मांगा है। लेबल उत्पादों के नए कदम का उद्देश्य चीन से आयात पर अंकुश लगाना और खरीदने से पहले

उत्पादों की उत्पत्ति के बारे में भारतीय खरीदारों को जागरूक करना ह। इससे चीनी सामानों की बिक्री पर कुछ प्रभाव पड़ सकता है, हालाँकि, जिओमी, ओप्पो, रिअलमी जैसी मोबाइल कंपनियाँ मेड इन इंडिया लेबल प्रदर्शित करेंगी जो वास्तव में बिक्री में मदद कर सकती हैं।

लावा इंटरनेशनल ने हाल ही में अगले भारतीय स्मार्टफोन को डिजाइन करने के इच्छुक छात्रों और पेशेवरों के लिए अपनी डिजाइन इन इंडिया प्रतियोगिता शुरू की है। यह सुनने में जितना आसान लग सकता है, इसे अमल में लाने के लिए काकवॉक नहीं है। सेमीकंडक्टर वेफर फैब्रिकेशन इकाइयों के उत्पादन जैसी कुछ निश्चित प्रौद्योगिकी की कमी के कारण भारत में स्मार्टफ़ोन का विनिर्माण एक चुनौती है।

चीनी उत्पादों का बहिष्कार– भारतीयों में देशभक्ति की भावनाएं गहरी हैं जिसे गणतंत्र दिवस, स्वतंत्रता दिवस, क्रिकेट मैच और आतंकी हमले या युद्ध जैसी स्थितियां में देखा जा सकता है। परंतु प्रश्न यह है कि मेक इन इंडिया 'को उतनी गति क्यों नहीं मिली जितनी आत्मानिर्भर भारत' को? क्या अंतर्निहित अवधारणा समान नहीं है? विशेष रूप से, चीन से सस्ते आयात के कारण 50þ से अधिक विनिर्माण इकाइयां या तो बंद हो गई हैं या कम क्षमता पर चल रही हैं। भारत ने 1990 के फीफा विश्व कप के दौरान भी फुटबॉल गेंदों की आपूर्ति की थी, लेकिन अब घर के बारे में बोलने के लिए कुछ भी नहीं है। इसके अलावा, ये कुछ उदाहरण हैं, कैसे पिछले दो दशकों में चीन ने मेड इन इंडिया सपने को मार दिया है। हजारों छोटी इकाइयां लुप्त हो गई हैं, और सस्ते चीनी उत्पादों की आमद के कारण श्रमिक बेरोजगार हो गए हैं। हालांकि, उत्पादों का बहिष्कार लोगों के हाथों में है। यदि लोगों के पास स्थानीय निर्माताओं से प्रतिस्पर्धी दरों पर अच्छे विकल्प हैं, तो ही कोई प्रभाव पड़ेगा।

इसके अलावा, भले ही सभी चीनी उत्पादों पर एक काल्पनिक प्रतिबंध लगा दिया गया हो, वर्तमान में, यह भारतीय अर्थव्यवस्था के लिए हानिकारक होगा। वस्तुओं की लागत में वृद्धि होगी और इसके परिणामस्वरूप, यह मुद्रास्फीति को बढ़ाएगा। यह उपभोक्ता खर्च पर चोट कर सकता है और आर्थिक मंदी के जोखिम को बढ़ा सकता है। यदि भारत चीनो उत्पादों पर अपनी निर्भरता कम करना चाहता है, तो इसे चरणबद्ध तरीके से और सावधानीपूर्वक योजना के साथ करने की आवश्यकता है।

इसके अलावा, भारत को अपने पारिस्थितिकी तंत्र का निर्माण करने और वैश्विक निवेशकों को सही वातावरण प्रदान करने, व्यापार करने में आसानी, कम लाल–टेप और स्थानीय विनिर्माण और आईटी को बढ़ावा देने के लिए बुनियादी ढाँचा प्रदान करने की आवश्यकता है।

वैश्विक प्रारूप– अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रम्प ने हाल ही में कहा है कि उन्हें जानकारी मिली है कि वायरस चीन में उत्पन्न हुआ है और डब्ल्यूएचओ और चोन पर लगातार हमला कर रहा है। प्रतीत होता है कि अमेरिका का चीन के साथ एक गोरिल्ला युद्ध जारी रहेगा उपरोक्त के अलावा अमेरिका सुरक्षा चिंताओं का हवाला देते हुए सरकारी वीडियो फोन पर लोकप्रिय वीडियो ऐप टिक–टॉक पर प्रतिबंध लगा सकता है। चीन में 15 ट्रिलियन डॉलर क करीब एक सकल घरेलू उत्पाद है। जो भारत के लिए 3 ट्रिलियन डॉलर से कम है।

निष्कर्ष– संसाधनों और तकनीकी प्रगति की अविश्वसनीय मात्रा उन्हें दुनिया पर हावी होने क लिए बढ़त और शक्ति देती है। बैन को लेकर देशों को इस तरह के कदम उठाने से रोकने के लिए विश्व व्यापार संगठन के अंतरराष्ट्रीय कानून और नियम हैं। हालांकि, भारत कुछ उत्पादों के लिए राष्ट्रीय सुरक्षा चिंताओं का हवाला दे सकता है और उन पर प्रतिबंध लगा सकता है, जैसा कि अमेरिका ने हुवेई के साथ किया है। भारत भी चीन द्वारा स्टॉक निवेश की जांच कर रहा है ताकि उन्हें भारतीय कंपनियों पर नियंत्रण करने से रोका जा सके। अन्य प्रमुख देश जैसे जापान, ऑस्ट्रेलिया और जर्मनी भी चीन के साथ उग्र हैं और आने वाले महीनों और वर्षों में चीनी व्यापार पर निर्भरता को कम करना पसंद कर सकते हैं और इन सब के कारण भारत के रोजगारों प्रभावित हुए है, जिस पर नियंत्रण आवश्यक है।

♦♦♦♦♦

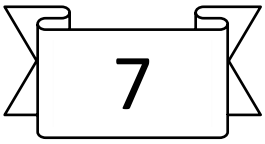

चीन की विस्तारवादी चाल का भारतीय जवाब

संजय

परास्नातक, राजनीति विज्ञान विभाग, दिल्ली विश्वविद्यालय

कोरोना संकट आने के बाद से ही पूरे विश्व ने चीन को इसका जिम्मेदार माना है। विश्व के लगभग सभी देश इस एक बात से तो सहमत हैं ही कि यह संकट चीन की लापरवाही के कारण ही आज विश्व के हर देश के सामने काल बनकर खड़ा है। इस लापरवाही का पूरा विश्व विरोध कर रहा है और चीन द्वारा जानबूझ कर फैलाने का आरोप भी लगा रहा है। इस दबाव से बचने के लिए एवं कोरोना महामारी से विश्व का ध्यान भटकाने के लिए उसने पुनः अपनी विस्तारवादी नीति का सहारा लिया है। चीन ने अपने सभी पड़ोसियों के साथ अपने सीमा विवादों को विस्तार देने का फैसला किया ताकि विश्व का ध्यान कोरोना से हट जाए, क्योंकि चीन के दृष्टिकोण में कोरोना का संकट उसके लिए सीमा विवादों से कहीं ज्यादा घातक साबित होगा। कोरोना महामारी से भारत सबसे ज्यादा प्रभावित होने वाले देशों की सूची में अमरीका और ब्राजील के बाद तीसरा देश बन गया है।

इस महामारी से जूझ रहे भारत को और कमजोर करने के लिए चीन ने लद्दाख के गलवान घाटी क्षेत्र में घुसपैठ कर यथास्थिति बदलने का प्रयास किया। हालाँकि यह पहली बार नही है जब उसने ऐसा किया हो, परंतु यह पहले से काफी अलग और भारत की आत्मा को चोट पहुँचाने वाला था क्योंकि इस गतिरोध में 1975 के बाद 15 जून 2020 की आधी रात को फिर से खूनी संघर्ष हुआ और हमारे बीस वीर सैनिक शहीद हो गए। शहीद होने से पहले हमारे जवानों ने भी उसका मुँह तोड़ जवाब दिया और कई चीनी सैनिकों की गर्दन तोड़कर उन्हें मौत के घाट उतार दिया। चीन के इस कुकृत्य का जवाब भारत की ओर से कड़ाई से दिया गया। इस घटना का असर भारत और चीन के सम्बन्ध पर दूरगामी रूप से होगा। भारत अब किसी भी रूप में अपनी संप्रभुता से कोई समझौता नही करने वाला। आज पूरा विश्व भारत को एक नेतृत्वशील देश के रूप में देख रहा है और भारत की भूमिका की प्रशंसा के साथ ही उसके नेतृत्व को स्वीकार भी करने लगा है।

चीन की चाल पर भारत की प्रतिक्रियाः चीन की घुसपैठ का जवाब देते हुए और उसकी विस्तारवादी नीति को ठेंगा दिखाने वाले भारत ने सीमा पर कड़ा फैसला किया है। इसीलिए हमारे वीर सैनिक दिन–रात सीमा पर तैनात हैं। गलवान की घटना से एक बार फिर भारत को अपनी कमजोरी का एहसास हुआ है और इसी को दूर करने की दिशा में भारत ने अपने सीमावर्ती इलाकों में अपनी स्थिति मजबूत करने के लिए मूलभूत ढाँचों जैसे सड़क, पुल और हवाई पट्टियों का निर्माण कार्य तेज कर दिया है ताकि युद्ध काल में सैनिकों को जल्दी से जल्दी सीमा तक पहुँचाया जा सके। इतना ही नहीं, अब भारत चीन की दादागीरी को कतई सहन नही करेगा और न ही झुकेगा। इस पूरे घटनाक्रम के बीच वीर सैनिकों के सम्मान में पूरे देश में चीन का कड़ा विरोध हो रहा है और उसके बहिष्कार के लिए जनता एकजुट हो गई ह। इसी दिशा में सोशल मीडिया पर चीन के ऐप्स को प्रतिबंधित करने के लिए और उसकी कंपनियों को दिए गए ठेके रद्द करने के लिए प्रदर्शन हुए। विकल्प में स्वदेशी का इस्तेमाल और उसे बढ़ावा देने के लिए जनता ने दबाव बनाया। इस स्वदेशी से दो लाभ होंगे, पहला तो हमार युवा प्रतिभाओं को नया मौका मिलेगा तो वही दूसरी ओर भारत की दूसरे देशों पर निर्भरता कम होगी और आत्मनिर्भर भारत अभियान को मदद मिलेगी।

इसी संदर्भ में भारत सरकार ने कड़ा फैसला करते हुए 59 चीनी ऐप्स को प्रतिबंधित कर दिया है जिनमें टिकटॉक और केमस्केनर जैसे ऐप्स प्रमुख थे, इनके सबसे ज्यादा उपयोगकर्ता भारत में थे। ये ऐप्स निजता का भी उल्लंघन करते थे और हमारी संवेदनशील जानकारी चीन सरकार को दे रहे थे। इसके साथ ही भारत में चीन की कंपनियों के ठेके एक–एक कर रद्द किए जा रहे हैं। इस सब का लाभ हमारे युवाओं और भारतीय कंपनियों को मिल रहा है। हमारे प्रधानमंत्री जी द्वारा 'आत्मनिर्भर भारत' अभियान चलाया गया है और इसी योजना के तहत ही प्रधानमंत्री जी ने देश के युवाओं को 'आत्मनिर्भर भारत ऐप्स इनोवेंशन चौलेंज' योजना के अंतर्गत स्वदेशी सोशल मीडिया ऐप्स बनाने की चुनौती दी है। जिससे सोशल मीडिया पर ऐप्स के लिए हमारी चीन पर निर्भरता कम हो और चीन को कड़ा संदेश दिया जा सके।

परंतु यह फैसला जनता के सहयोग के बिना कभी न तो संभव था और न होगा। भारत सरकार मात्र जनता के दबाव के कारण ही चोन के प्रति कड़ा रुख नही अपना रही है, बल्कि भारतीय जनता के जोरदार समर्थन से उत्साहित भी है। भारत के इस कदम से चीन हैरान–परेशान है, उसे लग रहा था कि भारत सुरक्षात्मक नीति अपनाते हुए चुप बैठ जाएगा परंतु भारत अब अपनी संप्रभुता से कोई समझौता नही करेगा, फिर चाहे वो कितना भी ताकतवर क्यों न हो। भारत ने

चीन की इस चाल का जवाब आक्रामकता से दिया और इसी के चलते गलवान घाटी में चीन को पीछे हटने पर मजबूर होना पड़ा। इस कड़ी प्रतिक्रिया का देश के साथ पूरे विश्व में समर्थन मिल रहा है। भारतीय जनता चीन को जवाब देने में देश के साथ है। इसका अंदाजा इसी से लग जाता है कि लोग स्वदेशी का इस्तेमाल करने के लिए प्रतिबद्ध हैं। प्रधानमंत्री के भारतीय ऐप्स बनाने की चुनौती को स्वीकार्यता मिली और सोशल मीडिया पर बहुत कम समय में कई भारतीय ऐप्स आ गए हैं जिन्हें जनता का खूब समर्थन भी मिल रहा है।

इस पूरे घटनाक्रम से कुछ बिन्दु निष्कर्ष के रूप में हमारे सामने आते हैं। पहला, भारत अब चीन की किसी भी चाल को सहन नही करेगा, फिर इसके लिए चाहे उसके आर्थिक संबंधों पर ही क्यों न असर पड़े। दूसरा, भारत चीन के प्रति सुरक्षात्मक नीति छोड़ आक्रामकता के साथ जवाब देगा। तीसरा, विश्व भारत को अब विकासशील राज्य के रूप में न देखकर नेतृत्वशील राज्य के रूप में देखता है और भारत के नेतृत्व को स्वीकार भी कर रहा है इसका सबूत चीन के प्रति भारत की नीति का विश्व में समर्थन है।

भारत की कूट–नीति का असर यह हुआ ह कि विश्व का झुकाव अब चीन से भारत की ओर हो रहा है क्योंकि एक तरफ तो चीन है जिसने कोरोना की बात छिपा कर विश्व को संकट में डाला है, तो वही दूसरी तरफ भारत है जिसने इस महामारी से विश्व को बचाने का प्रयास किया है और कई महत्वपूर्ण दवाइयाँ विश्व को दी हैं जो कोरोना से लड़ने में मददगार मानी जाती हैं। इस घटना के बाद व्यापारिक कम्पनियाँ चीन छोड़ रही हैं। जाहिर सी बात है भारत के अलावा इन कंपनियों को शायद ही कोई बेहतर विकल्प मिले। इस कोरोना महामारी से भारत को मौका मिला है कि वह अपने को आत्मनिर्भर बना सके परंतु ऐसा तभी होगा जब भारत इस मौके का भरपूर लाभ उठाए।

इस कदम से पूरा विश्व भारत को आशा की नजरों से देख रहा है। अतः यह बात स्पष्ट है कि भारत चीन की विस्तारवादी नीति में आज सबसे बड़ा बाधक है और इसका एक कारण जनता का विश्वास और विश्व का समर्थन भी है। आज भारत की प्रतिबद्धता आत्मनिर्भर और शक्तिशाली बनने की है जिस पर इसने तेजी से कार्य करना भी शुरू कर दिया है।

♦♦♦♦♦

8

भारत–चीन संबंध एवं चीनी ऐप्स का बहिष्करण

जया ओझा

शोधार्थी, राजनीति विज्ञान विभाग, दिल्ली विश्वविद्यालय

वर्तमान समय में जब विश्व व्यवस्था को कोरोना जैसी वैश्विक महामारी से निपटने के लिए आपसी सहयोग, समन्वय एवं सहभागिता की आवश्यकता है, तब विश्व के दो बड़े देश भारत तथा चीन सीमा–विवाद के कारण मतभेदों में उलझे हुए हैं। विवादित अक्साई चीन में स्थित गलवान घाटी को लेकर दोनों देशों की सेनाओं के मध्य भरपूर तनाव देखा गया। भारत का आरोप है कि गलवान घाटी के किनारे चीनी सेनाओं द्वारा अवैध रूप से टेंट लगाकर सैनिकों की संख्या में वृद्धि की जा रही है, वहीं चीन का मानना है कि भारत गलवान घाटी के निकट रक्षा संबंधी अवैध निर्माण कर रहा है। इस घटना से पूर्व उत्तरी सिक्किम में भारतीय व चीनी सैनिकों में झड़प देखा गया। परिणामस्वरूप, 20 भारतीय जवान शहीद हो गए।

यद्यपि चीन पर कोरोना वायरस प्रसारित करने का आरोप पहले से ही लग रहा था, परंतु 'वास्तविक नियंत्रण रेखा' (एल.ए.सी.) पर इन दो बड़ी ताकतों के बीच जिस प्रकार तनाव बढ़ा, उसी प्रकार देश में चीन विरोधी भावनाएँ अत्यधिक मुखर होने लगी। सरकार द्वारा 59 चीनी ऐप्स को पूर्णतः बंद करने का आदेश दे दिया गया। परंतु प्रश्न यह है कि भारत–चीन सीमा–विवाद को क्या ऐप्स के बहिष्करण द्वारा सुलझाया जा सकता है? चीन के सॉफ्टवेयर या ऐप्स को बंद करने से भारत को क्या लाभ मिलेगा? यद्यपि भारतीय प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी जी द्वारा पहले ही "आत्मनिर्भर भारत" का नारा बुलंद कर दिया गया था, परंतु भारत में चीन की उपस्थिति प्रत्येक क्षेत्र में देखी जा सकती है जिससे मुँह मोड़ना संभव नहीं है।

भारत एवं चीन दोनों देशों ने एक साथ साम्राज्यवादी शासन से मुक्ति पाई। भारत द्वारा जहां लोकतन्त्र के मूल्यों को स्वयं में समाहित किया गया, वहीं चीन लोकतान्त्रिक व्यवस्था को समाहित करने में असफल रहा। वास्तविकता यह है कि भारत के विशाल आकार तथा समकालीन समय में उसके उभार ने चीनी नेतृत्व के समक्ष चुनौती पेश कर दी है। वर्ष, 1800 के आरंभिक समय तक भारत एवं चीन दोनों सबसे बड़ी अर्थव्यवस्थाओं में गिने जाते थे। 20वीं सदी के मध्य

में औपनिवेशिक काल को समाप्ति के उपरांत यह माना जाने लगा कि दोनों में शीर्ष तक पहुँचने की क्षमता है। यद्यपि उस समय यह दोनों ही देश निर्धनता की श्रेणी में आते थे। चीन को लग रहा था कि, भविष्य में भारत उसका प्रतिद्वंदी बन सकता है। भारत जब 'हिन्दी–चीनी भाई–भाई' के नारे लगा रहा था, उसी समय चीन द्वारा एशिया में वर्चस्व जमाने का कार्य अतिशीघ्रता से आरंभ कर दिया गया था। तदोपरांत, भारत–चीन सम्बन्धों में कई प्रकार के मोड़ देखे गए। हिन्दी–चीनी भाई–भाई के नारे से लेकर वर्ष 1962 के भारत–चीन युद्ध से होते हुए दोनों देशों के संबंध आज भी विभिन्न मंचों पर कटुतापूर्ण दिखते हैं। परंतु वैश्विकत कृत के युग में आज पूरा देश एक ' वैश्विक गाँव' के रूप में परिवर्तित हो गया है। जहां निर्भरता की अवधारणा को बखूबी देखा जा सकता है। कोरोना काल जैसे वैश्विक महामारी के दौर में भारत के प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी जी द्वारा 'आत्मनिर्भर भारत' का आह्वान किया गया, जिसके अंतर्गत 'लोकल के लिए वोकल' का नारा दिया गया। यद्यपि यह कोई नई अवधारणा नहीं हैं। इससे पहले गांधी जी द्वारा भी स्वदेशी की अवधारणा को बढ़ावा दिया गया था, जिसमें कुटीर उद्योगां को सशक्त करने की बात कही गई थी। परंतु वर्तमान समय में भारत के रसोई घर से लेकर बेडरूम में एयर कंडीशनर मशीनों की आवश्यकता, मोबाइल फोन तथा डिजिटल वैलेट के रूप में चीन कहीं न कहीं विद्यमान है। ऐसे में चीन का बहिष्करण करना भारत के लिए इतना सरल नहीं है जितना वह दिखाई देता है। चीन द्वारा भारत में 6 अरब डॉलर से भी अधिक प्रत्यक्ष विदेशी निवेश किया गया है। मुंबई में विदेशी विषयों के थिंक टैंक 'गेटवे हाउस' द्वारा भारत के अंतर्गत ऐसी 75 कंपनियों की पहचान की गई है, जो ई– कॉमर्स, फिनटेक, सोशल मीडिया जैसी सेवाओं में हैं एवं उनमें चीन का निवेश है। इस प्रकार तकनीकी निवेश के कारण चीन द्वारा भारत पर अपना वर्चस्व जमा लिया गया है। उदाहरणतः बाइटडांस, टिकटॉक की मूल कंपनी है जो चीन की है तथा यह यूट्यूब से अधिक भारत में लोकप्रिय है। राष्ट्रीय सुरक्षा चिंताओं को देखते हुए सरकार द्वारा टिकटॉक समेत 59 चीनी ऐप्स पर प्रतिबंध लगा दिया गया। यद्यपि कुछ ऐसे प्रमुख ऐप्स हैं जिनसे न केवल चीन को हानि होगी अपितु, भारत को भी इसका सामना करना पड़ेगा–

टिकटॉकः– वर्तमान समय में टिकटॉक अत्यधिक लोकप्रिय बना हुआ है। ऐसे कितने लोग हैं जो टिकटॉक के माध्यम से स्टार तक बन गए। चीनी कंपनी बाइटडांस के इस प्रॉडक्ट को भारत में लगभग 11.9 करोड़ व्यक्ति प्रयोग में लाते हैं। इस पर प्रतिबंध से चीन को भरी क्षति का सामना करना पड़ेगा, परंतु भारत में भारतीयों के लिए भी यह कमाई का साधन बन गया है। जिसके जाने से भारत के कई लोगों को बेरोजगारी का सामना करना पड़ेगा।

यूसी ब्राउजरः– यूसी ब्राउजर को विश्व में लगभग 1.1 अरब लोगों द्वारा डाउनलोड किया गया है, जिसमें आधा हिस्सा मात्र भारत का है। यद्यपि इसके प्रतिबंद्ध से चीन को बहुत बड़े क्षति का सामना करना अवश्यंभावी है।

हेलोः– भारत में इन दिनों हेलो ऐप अत्यधिक प्रसिद्ध रहा। यह भी चीन कंपनी के बाइटडांस का ही प्रोडक्ट है। इस समय भारत में हेलो ऐप के क्रमशतः 5 करोड़ सक्रिय प्रयोगकर्ता हैं। इस ऐप ने भारत के शेयरचैट ऐप को चुनौती देने का काम किया। इस पर प्रतिबंध लगने से एक बार पुनः शेयर चैट के प्रति लोगों का ध्यान आकर्षित होगा।

इस प्रकार, भारत चीन के लिए एक बड़ा बाजार है। यहाँ के लोग टिकटॉक, हैलो, लाइकी, विगो, कैम स्कैनर, यूसी ब्राउजर जैसे ऐप्स का अधिक मात्र में प्रयोग करते हैं, जिससे चीन की अर्थव्यवस्था को अधिक लाभ मिलता है। इन ऐप्स पर प्रतिबंध लग जाने के साथ ही चीन की अर्थव्यवस्था पर भारी असर पड़ेगा। परंतु इससे भारत चीन के संबंध और बिगड़ेंगे। ऐप्स को बैन करना सीमा विवाद को सुलझाने में मददगार प्रमाणित नही हो सकता। प्रो. हुआंग यूनसॉन्ग का मानना है कि, दोनों देशों को एक–दूसरे की आवश्यकता है। चीन भारत को नजरअंदाज नहीं कर सकता। एक वैश्विक अर्थव्यवस्था में, देश एक दूसरे पर निर्भर हैं। मैं भारत–चीन सम्बन्धों से निपटने के लिए एक सकारात्मक मानसिकता को बढ़ावा देने का पक्षधर हूँ, विशेषकर जब विश्व महामारी के चरण से गुजर रहा हो तब। चीनी वस्तुओं के बहिष्कार का दोनों देशों के संबंध को लेकर प्रो. स्वर्ण सिंह कहते हैं कि " भारत के चीन बहिष्कार का चीन पर आर्थिक प्रभाव से अधिक राजनीतिक प्रभाव पड़ेगा। जो कोविड–19 महामारी के लिए वैश्विक क्रोध का सामना कर रहा है।" अतएव भारत एवं चीन को एक विकल्प ढूँढने की अवश्यकता है जिसके माध्यम से दोनों देशों के बीच शांति को बहाल किया जा सके। यद्यपि भारत द्वारा समय–समय पर पहल की जाती रही है, चीन को भी पहल करने की अवश्यकता है, क्योंकि अब यह चीन को पता होना चाहिए कि भारत एक उभरती हुई शक्ति के रूप में परिलक्षित हो चुका है।

♦♦♦♦♦

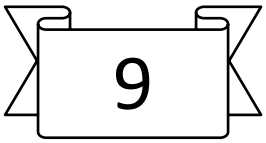

चीन के विस्तारवाद के समक्ष भारत की भूमिका

दीपक

भारत और चीन के बीच सीमा विवाद इस लिहाज से नया है कि इस बार विवाद की जगह लद्दाख का गलवान क्षेत्र है लेकिन ऐसा नही है कि चीन का केवल भारत के ही साथ सीमा विवाद हो कई और भी देश है जिनके साथ वह सीमा विवाद के नाम पर उलझा हुआ है। अमेरिका के विदेश मंत्री माइक पॉम्पियो भी कह चुके हैं कि चीन का सभी पडोसियों के साथ रवैया दादागिरी वाला है पिछले कुछ वर्षों में चीन का हांगकांग से भी तानाशाही वाला बर्ताव रहा है और उसका भूटान, नेपाल, दक्षिण चीन सागर, पूर्वी चीन सागर, तिब्बत में भी विवाद बना हुआ हैं। वर्तमान में दक्षिण चीन सागर का विवाद अत्यधिक चर्चा में रहा।

इंडोनेशिया और वियतनाम के बीच पडने वाला यह दक्षिण चीन सागर 35 लाख वर्ग किलोमीटर में फैला हुआ है। यह सागर इंडोनेशिया, चीन, फिलीपींस, मलेशिया, ताइवान और ब्रुनई से घिरा है। लेकिन सागर पर इंडोनेशिया को छोडकर बाकी सभी 6 देश अपना दावा करते हैं। आज से कुछ वर्षों पहले तक इस सागर को लेकर कोई तनातनी नही होती थी। लेकिन आज से करीब 5 वर्ष पहले चीन के समंदर से ढुलाई करने वाले जहाज, ईंट और रेत लेकर पहुंचे। पहले यहां एक छोटी समुंद्री पट्टी पर बंदरगाह बनाया गया। फिर हवाई जहाजों के उतरने के लिए हवाई पट्टी और फिर देखते ही देखत चीन ने यहां आर्टिफिशियल द्वीप तैयार कर सैन्य अड्डा बना दिया जो चीन की एक बडी महत्वकांक्षा को स्पष्ट करता है कि दक्षिण चीन सागर के संपूर्ण क्षेत्र के व्यापार, व्यवस्था एवं प्राकतिक सपंदा पर उसका नियंत्रण हो।

अब प्रश्न यह उठता है कि "क्या 21वीं सदी में भी चीन अपनी साम्राज्यवादी और विस्तारवादी नीति को आगे बढाता जाएगा?" और दूसरा प्रश्न यह उठता है कि "क्या छोटे देश जिनका सीमा विवाद चीन से है वह चीन की विस्तारवादी नीतियों के समक्ष घुटने टेक देंगे?" इन्हीं दोनों प्रश्नो के जवाब में चीन के विस्तारवाद के समक्ष भारत को भूमिका स्पष्ट होती है कि भारत ही एकमात्र ऐसी महाशक्ति है जो चीन की विस्तारवादी नीतियों पर लगाम लगा सकता है क्योंकि

वर्तमाान अंतराष्ट्रीय राजनीति में महाशक्तियाँ बिना किसी निजी विवाद के दूसरे देशों के विवादों में हस्तक्षेप नही करती हैं। ऐसे में अमेरिका का चीन के साथ कोई सीमा विवाद नही है और रूस, चीन से अपनी वैचाारिक मित्रता के कारण कोई टकराव नही करेगा। इन परिस्थितियों में चीन से सीमा विवादित देशों में भारत ही एकमात्र ऐसी महाशक्ति है जो चीन की विस्तारवादी नीतियों से ग्रसित होने के कारण चीन की विस्तारवादी नीतियों को रोकने में सक्षम है। इसके अलावा अंतराष्ट्रोय मंचो पर चीन के भारी–भरकम विरोध के बावजूद भारत को एन.एस.जी. और सयुंक्त राष्ट्र संघ में सुरक्षा परिषद् की अस्थायी सदस्यता मिलने से स्पष्ट है कि अंतराष्ट्रीय स्तर पर भारत की छवि चीन से अधिक मजबूत हुई है।

वैसे तो चीन से एल.ए.सी. को से लेकर सीमा विवाद पुराना है लेकिन हाल ही के दिनों में लद्दाख के कुछ क्षेत्र गलवान, पैंगोंग झील, गोगरा और हॉट स्प्रिंग्स में चीन के आकमक रूख को देखें तो पता चलता है कि चीन की विस्तारवादी महत्वकांक्षा चरम पर ह। लेकिन 15 जून 2020 को लद्दाख के गलवान में हुई हिंसा में भारत के शौर्य के बाद विवाद को लेकर भारत का रूख स्पष्ट है कि भारत, चीन की विस्तारवादी नीतियों का जवाब उसी की भाषा में देने में सक्षम है। जिसे प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की 3 जुलाई 2020 को हुई लद्दाख यात्रा में सैनिक संबोधन के द्वारा समझा जा सकता है। जिसमें प्रधानमेत्री मोदी ने स्पष्ट कर दिया कि "विस्तारवाद का युग समाप्त हो चुका है और यह युग विकासवाद का है।" विस्तारवाद की नीति ने विश्व शांति के लिए खतरा पैदा किया है और इसी अनुभव के आधार पर पूर विश्व ने इस बार फिर विस्तारवाद के खिलाफ मन बना लिया है। जब विस्तारवाद की जिद्द किसी पर सवार हो जाती है तो उसने हमेशा विश्व शांति के सामने खतरा पैदा किया है और यह न भूले कि इतिहास गवाह है कि विश्व में सिर उठाने वाली ऐसी ताकतें मिट गई हैं या मुड़ने पर मजबूर हो गई हैं।

हालांकि चीन के बारे में एक बात बहुत स्पष्ट है कि चीन कूटनीतिक भाषा को बहुत अच्छे से समझता है। प्रधानमंत्री मोदी ने लद्दाख में सैनिक संबोधन में चीन का नाम न लेकर विस्तारवाद पर चीन को घेरा है। बहरहाल कूटनीति के इशारे काफी छोटे होते हैं जिन्हें समझना पडता है। चीन ने जो भी समझा हो लेकिन हमें यह समझना चाहिए कि यह इस मामले का अंत नही है बल्कि यह एक शुरूआत है विस्तारवाद के अंत और विकासवाद के प्रारंभ की शुरूआत है।

♦♦♦♦♦

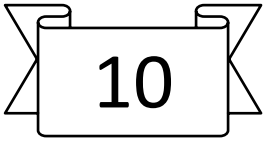

सीमा विवाद के उपरान्त चीनी उत्पादों को बॉयकाट एवं भारत–चीन के मध्य आर्थिक संबंध

डॉ. अमित अग्रवाल

असिस्टेंट प्रोफेसर (वाणिज्य), राजकीय रज़ा स्नातकोत्तर महाविद्यालय

विश्व में दो देश चीन तथा भारत ऐसे है, जिनकी जनसंख्या एक अरब से अधिक है तथा ये दोनों देश राष्टोय कायाकल्प के ऐतिहासिक मिशन के साथ ही विकासशील देशों की सामूहिक उत्थान प्रक्रिया को गति देने में महत्त्वपूर्ण प्रेरक की भूमिका निभा सकते हैं। 2.7 बिलियन से अधिक लोगों के संयुक्त बाजार तथा दुनिया के 20 प्रतिशत के सकल घरेलू उत्पाद के साथ, भारत और चीन के लिये आर्थिक एवं व्यापारिक सहयोग के क्षेत्र में व्यापक संभावनाएँ विद्यमान हैं। भारत में चीनी कंपनियों का संचयी निवेश 8 बिलियन अमेरिकी डॉलर से अधिक का है। भारत के आयात का बड़ा हिस्सा चीन से आता है, लेकिन फिर भी ये चीन के लिए टॉप एक्सपोर्ट डेस्टिनेशन नही है। चीन ने 2019 में जितना कुल निर्यात किया उसका सिर्फ 3 फीसदी हिस्सा ही भारत को आया। वर्ष 2018 में भारतीय प्रधानमंत्री तथा चीन के राष्ट्रपति के बीच वुहान में 'भारत–चीन अनौपचारिक शिखर सम्मेलन' का आयोजन किया गया। जिसमें वैश्विक और द्विपक्षीय रणनीतिक मुद्दो के साथ–साथ घरेलू एवं विदेशी नीतियों के लिये उनके संबंधित दृष्टिकोणों पर व्यापक सहमति बनी।

वर्ष 2019 में भारतीय प्रधानमंत्री तथा चीन के राष्ट्रपति के बीच चेन्नई में 'दूसरा अनौपचारिक शिखर सम्मेलन' आयोजित किया गया। वर्ष 2020 में भारत और चीन के बीच राजनयिक संबंधों की स्थापना की 70 वीं वर्षगांठ है तथा भारत–चीन सांस्कृतिक तथा पीपल–टू–पीपल संपर्क का वर्ष भी है। ऐसे समय में विश्व व्यवस्था के दो बड़े राष्ट्र भारत व चीन सीमा विवाद के कारण आपस में उलझे हुए हैं, जब विश्व व्यवस्था को वैश्विक महामारी से निपटने के लिये आपसी सहयोग, समन्वय एवं सहभागिता की आवश्यकता है। भारत–चीन के मध्य हालिया सीमा विवाद का केंद्र अक्साई चोन में स्थित गलवान घाटी प्रत्यक्ष उदाहरण हं, जो दोनों देशों के बीच रक्षा व सुरक्षा संबंधों की जटिलता को प्रदर्शित करते हैं। 45 साल बाद एल.ए.सी. पर दूसरे देश की

फौज के हाथों किसी भारतीय सैनिक की जान गई। दोनों देशों के बीच संबंधों को व्यापक दृष्टिकोण से समझने की आवश्यकता है।

भारत और चीन की 3488 किलोमीटर लंबी सीमा पर कई बिंदु ऐसे भी हैं जहां दोनों देशों के बीच विवाद है। हजारों वर्षों तक तिब्बत देश ने भारत और चीन को भौगोलिक रूप से अलग और शांत रखा, परंतु जब वर्ष 1950 में चीन ने तिब्बत पर आक्रमण कर वहाँ कब्जा कर लिया तब भारत और चीन आपस में सीमा साझा करने लगे और पड़ोसी देश बन गए। वर्ष 1962 में सीमा पर युद्ध संघर्ष से द्विपक्षीय संबंधों को गंभीर झटका लगा। वर्ष 1976 मे भारत–चीन राजनयिक संबंधों को फिर से बहाल किया गया। चीन स्वयं को सुपर पॉवर बनने को राह में भारत को रोड़ा मानता है। चीन ने भारत के कुछ भू–भाग पर कब्जा ही नहीं किया, बल्कि धीरे–धीरे भारत के बाजार पर भी पकड़ बनाकर, अपना डंका पिटवाने लगा।

भारत और चीन के बीच की समस्याओं को अल्पावधि में हल किया जाना कठिन है, लेकिन मौजूदा रणनीतिक अंतर को न्यूनतम करने, मतभेदों को कम करने और यथास्थिति बनाए रखने जैसे उपायों से समय के साथ आपसी संबंधों को और बेहतर बनाया जा सकता है। भारत और चीन के मध्य संबंधों में समय के साथ परिवर्तन होते रहे हैं। प्रो. हुआंग यूनसॉन्ग कहते हैं कि यह एक संरचनात्मक मुद्दा है क्योंकि हमारी अर्थव्यवस्थाएं विकास के अलग–अलग स्तर पर हैं। इस मुद्दे को हल करने के लिए दोनों तरफ दीर्घकालिक योजना और धैर्य की जरूरत है। इसे अगर दूसरी तरह से देखें तो, इस व्यापारिक असंतुलन से भारत को फायदा हो रहा है। तुलनात्मक रूप से सस्ते चीनी उत्पादों का आयात करके भारत ने कीमती फॉरेन करंसी रिजर्व को बचाया है और अपनी पूँजी दक्षता में सुधार किया है।

आईटी एवं इलेक्ट्रॉनिक्स मंत्रालय ने भारत में, आई.टी. एक्ट के 69–ए सेक्शन के तहत प्रचलित चीन के 59 एप्प पर प्रतिबंध लगा दिया। सरकार ने इन 59 एप्प पर प्रतिबंध लगाने का निर्णय किया है। सरकार को इन एप्प के गलत इस्तेमाल को लेकर कई शिकायतें भी मिल रही थी। सरकार को यह भी शिकायत मिल रही थी कि ये एप्प एंड्रायड एवं आई.ओ.एस. प्लेटफार्म से डाटा चोरी करने में भी सहायक है जिससे देश की सुरक्षा को लेकर सवाल खड़े होने लगे थे। सरकार के साइबर क्राइम पर नजर रखने वाले सेंटर एवं गृह मंत्रालय की तरफ से भी इन एप्प पर प्रतिबंध की सिफारिश की गई थी। इनमें टिकटॉक, हेलो, वीचैट, यूसी न्यूज आदि जैसे प्रमुख एप्प भी शामिल हैं। वहीं चीन से आयात पर लगाम के लिए औद्योगिक संगठनों से

रायशुमारी और मंथन शुरू हो गया कि कब और कैसे आयात पर रोक लगाई जा सकती है। भारत की कार्रवाई पर विरोध जताते हुए भारत में चीन दूतावास के प्रवक्ता जी रोंग ने कहा कि भारत का यह कदम विभेदकारी, पक्षपातपूर्ण है जिसके जरिए चीनी ऐप्स को निशाना बनाया गया है। यह एक तरह से राष्ट्रीय सुरक्षा के नाम पर अपवाद का दुरुपयोग है और पारदर्शी व्यवस्था का उल्लंघन है। चीनी पक्ष गंभीरता से इस मुद्दे को लेकर चिंतित है और इस तरह की कार्रवाई का दृढ़ता से विरोध करता है। यह अंतर्राष्ट्रीय व्यापार और ई–कॉमर्स की सामान्य प्रवृत्ति के खिलाफ है। भारत के कदम से विश्व व्यापार संगठन के नियमों के उल्लंघन का संदेह होता है और चीन इस तरह के कदम को किसी रूप में सही नहीं मानता है। यह उपभोक्ता हितों के भी खिलाफ है।

भारत, चीन के माल का बहिष्कार नहीं कर सकता, क्योंकि व्यापार भावनाओं पर नहीं होते, सस्ते उत्पादों और मुनाफों पर टिके होते हैं। वैश्विक दौर में किसी भी देश के लिए किसी अन्य देश के उत्पाद पर रोक लगा पाना संभव नहीं है। बोस्टन कंसल्टिंग ग्रुप की रिपोर्ट के अनुसार, भारत की फार्मास्यूटिकल इंडस्ट्री के 90 प्रतिशत कच्चे माल के लिए भारत चीन पर ही निर्भर है। इस तरह अगर चीन से रिश्ते बिगड़ते हैं, तो जरूरी दवा के लिए कच्चा माल की उपलब्धता प्रभावित हो जाएगी।

एक तथ्य है कि मौजूदा समय में भारत को चीन की ज्यादा जरूरत है न कि चीन को भारत की, उनके द्विपक्षीय व्यापार में असंतुलन से यह और स्पष्ट होता है। बीते साल द्विपक्षीय व्यापार करीब 90 अरब डॉलर का था इसमें करीब दो तिहाई हिस्सा भारत में चीनी निर्यात का था। चीन की सप्लाई चेन को लोकल सप्लाई चेन से बदलना है तो इसके लिए घरेलू उद्योगों को बढ़ावा देने की दीर्घकालीन आर्थिक रणनीति तैयार करनी होगी। चीन ने दवा उद्योग से लेकर बिजली सेक्टर तक अपना दखल बढ़ाकर काफी हद तक हमें खुद पर निर्भर बना लिया है। ऐसे में चीन का रातोंरात आर्थिक बहिष्कार करके हम अपना ही हाथ काटेंगे।

♦♦♦♦♦

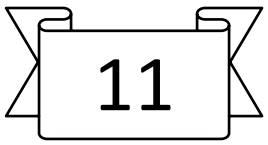

परशुराम की प्रतीक्षा का अंत

गरिमा शर्मा

शोधार्थी (पी.एच.डी), राजनीतिक विज्ञान विभाग, दिल्ली विश्वविद्यालय

पहली आहुति है अभी, यज्ञ चलने दो,
दो हवा, देश की आज जरा जलने दो।
जब हृदय–हृदय पावक से भर जायेगा,
भारत का पूरा पाप उतर जायेगा

.....(परशुराम की प्रतीक्षा, रामधारी सिंह दिनकर)

इन पंक्तियों का मर्म दो प्रकार के चिंतन शील व्यक्ति ही कर सकते है। एक वह जिनके द्वारा भारत–चीन के युद्ध के सम्पूर्ण इतिहास को जीया गया है और दूसरे वह जिन्होंने राष्ट्र कवि रामधारी सिंह दिनकर की व्यथा की भाँति चीन के प्रति भारत की हार की उस टीस को महसूस किया हो। राजनीति विज्ञान की शोधकर्ता होते हुए भी आज हिंदी साहित्य के आँगन के फूलों को शोध की बगिया में लाने का उद्देश्य इस कविता के पीछे छुपे उस ऐतिहासिक एवं राजनोतिक परिप्रेक्ष्य से एक बार पुनः वर्तमान पीढ़ी को अवगत कराना है, जो आज के भारत–चीन तनाव के संदर्भ में अंत्यत महत्वपूर्ण हा गया है।

वैसे भी साहित्य एवं राजनीति के मध्य संबंधो को रामधारी सिंह दिनकर एवं नेहरु के मध्य संवाद से ही बेहतरीन समझा जा सकता है जब रामधारी जी ने नेहरु के धन्यवाद करने पर प्रति उत्तर में कहा था कि जब–जब राजनीति लड़खड़ाती है साहित्य सदैव उसे संभाल लेता है और एक शोधकर्ता तो राजनीति से परे भी शोध की वंदना करता हुआ बस शोध सामग्री को एकत्रित करने में अर्जुन के समान एकाग्रचित होता है। इन सब हल्के–फुल्के व्यंग्यों से परे परशुराम की प्रतीक्षा एवं दिनकर को पुनः स्मरण करने का कारण गत दिनों में भारत–चीन के मध्य बढ़ते तनाव को लेकर है तथा दिनकर की यह कविता एक लम्बे समय तक वाद–विवाद का विषय भी बनी रही है।

इस कविता को ध्यान में रखकर गांधीवादी, साम्यवादी एवं वामपंथी पक्ष की अकसर आलोचना की जाती है। इनमें नेहरूवादी एवं समाजवादी दृष्टिकोण को भी सम्मिलित किया जाता है। इसके पीछे रामधारी सिंह दिनकर की तीक्षण कलम है जो सदैव आम जन मानस के हित में ही चली है। रशिम रति से उर्वशी तक भिन्न–भिन्न रूपों में अपनी कविता संग्रह के माध्यम से रामधारी सिंह दिनकर जी द्वारा सत्ता के विरुद्ध अपने शब्दों को पुरजोर माध्यम से प्रस्तुत किया गया है, जिसमें वह जातिवाद से लेकर भ्रष्ट सत्ता को समय–समय पर प्रश्न के दायरे में लाते रहे है।

परशुराम की प्रतीक्षा काव्य संग्रह 1962 में रामधारी सिंह दिनकर द्वारा भारत–चीन युद्ध के पश्चात की उस व्यथा को ध्यान में रखकर लिखा गया था जिस से प्रत्येक भारतवासी आघात महस्स कर रहा था। ऐसे विश्वासघात को देखकर रामधारी दिनकर गाँधीवादी शांति प्रियता की भी युद्ध अग्नि में आहुति देने को तत्पर थे। वास्तविकता में अन्तर्राष्ट्रीय संबंधों में जहाँ विषय सीमा एवं सुरक्षा से संबंधित होता है वहां अत्यधिक आदर्शवाद होना भी हानिकारक हो सकता है। कौटिल्य से लेकर विलियम ग्रे तक यह माना गया है कि अंतर्राष्ट्रीय राजनीति में कोई भी स्थाई मित्र एवं शत्रु नहीं होता है।

चीन के अंतर्गत माओं की विचारधारा एक विस्तृत एवं समृद्ध चीनी सभ्यता पर आधारित रही है। जिसने चीन के अंतर्गत आज तक मूल रूप लोकतंत्र को स्थापित नहीं होने दिया है। चीन की विस्तारवादी नीति में पूर्व में तिब्बत एवं वर्तमान में होन्गकोंग उचित उद्धरण प्रस्तुत करते है। यही कसाक वह लदाख एवं सिक्किम के लिए भी लगाये हुए है। अपनी चीनी सभ्यता से परे आर्थिक साम्राज्यवाद के रूप में भी चीन एशिया में अपन वर्चस्व को कायम करना चाहता है तथा भारत के अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर लोकतंत्र के लिए प्रेरणादायक प्रयास उसकी मोतियों की माला जैसी नीतियों के लिए अवरोधक बन जाते है इसलिए चीन द्वारा सर्वप्रथम पाकिस्तान को तथा हाल ही में नेपाल को अपनी साम्यवादी विचारधारा के आधार पर भारत के विरुद्ध खड़ा कर दिया गया है।

इन सभी कदमों के पीछे चीन के अंतर्गत उठने वाली लोकतांत्रिक आवाजों को दबाना भी एक महत्वपूर्ण उद्देश्य है। वह चाहे चीन के अल्पसंख्यक मुस्लिम समुदाय की हो यहाँ वहीं के नागरिकों की आधारभूत अधिकारों से संबंधित हो। राष्ट्रवाद को अफीम के रूप में प्रयोग करके चीन अपनी अखंड एकता को विश्व के समक्ष प्रस्तुत करना चाहता है जिस से वह साम्यवादी विचारधारा को सशक्त करते हुए पश्चिम को चुनौती दे सके।

भारतीय संस्कृति के शांतिप्रिय मूल्य विश्व में लोकतंत्र की स्थापना करने के लिए उचित है परन्तु जहाँ प्रश्न लोकतंत्र के स्वाभिमान की सुरक्षा का हो तब वहां भारत को भी यथार्थवादी दृष्टिकोण से उचित कदम उठाने की आवश्यकता है। 1996 भारत–चीन समझौते का सम्मान करना भारतीय मूल्यों की रक्षा करना था पर यह आवश्यक है कि पुनः पंचशील समझौते की पैठ में चीन कुठाराघात न करें। अतः इस बार ऐसा अवसर ना आयें कि साहित्य के माध्यम से एक बार फिर किसी दिनकर को हमारे अन्दर के परशुराम को जागृत करना पड़े, वरन हम वास्तविक दिनकर की व्यथा को याद रखते हुए परशुराम की प्रतीक्षा का अब अंत कर दे।

♦♦♦♦♦

डी.सी.आर.सी.

विकासशील राज्य शोध केन्द्र

अकादमिक अनुसंधान केन्द्र भवन

गुरू तेग बहादुर मार्ग

दिल्ली विश्वविद्यालय

दिल्ली-110007